।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

अप्रैल 2025

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 01

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क : 2100 रुपये मात्र मूल्य : 20 रुपये

सुरभि उवाच

हे प्रिय गोवत्सों ! सावधान होकर समय की पहचान करो। आज मानव जाति मेरी सन्तान अखिल गोवंश के महत्व से अनभिज्ञ होती जा रही है। माता का मूल्याकंन केवल आर्थिक उपयोगिता व अनुपयोगिता के आधार पर किया जा रहा है। यह काल का ही दुष्प्रभाव है अन्यथा जिस संस्कृति व देश में गाय को जगत माता तथा बैल को जगतपिता के रूप में अनादि काल से स्वीकार किया गया हो उसी संस्कृति व सभ्यता के संवाहक देश में मां–बाप का मूल्याकंन केवल मुद्रांक के रूप में किया जाय? इससे बड़ी मूर्खता एवं दुर्भाग्य क्या हो सकता है। जिस गाय व वृषभ ने युगों तक मानव जाति को माता–पिता से भी अधिक वात्सल्य एवं सात्विक पोषण प्रदान किया हो, जिन्होंने स्वास्थ्य, संस्कार, समाधान और अक्षय समृद्धि राष्ट्र को प्रदान की हो उनको साधारण पशु मानकर उनकी उपेक्षा तथा तिरस्कार करके अपने सर्वनाश व घोर पतन का आह्वान करने वाले देश तथा समाज का भविष्य क्या हो सकता है?

हे प्यारे गोवत्सों! आप स्वयं विचार करलो, निर्णय कर लो। हे मेरे आत्मजों ! जिस देश व समाज के पूर्वज तत्वज्ञ, विज्ञानवेता, महामनिषियों ने दीर्घकालिन तपस्या एवं अन्वेषणों द्वारा सृष्टि चक्र के सुचारू रूप से संचालनार्थ, राष्ट्र रक्षार्थ, मानव जाति के परम कल्याणर्थ तथा अक्षय समृद्धि के प्राप्तियार्थ प्रमुख आधार स्तम्भ के रूप में केवल गोवंश को सर्वोपरि स्वीकार किया हो उसी देश में उन्हीं की संतान इतनी वैचारिक निर्बलता को प्राप्त हो गई, इतनी कृतघ्नी हो गई कि अपने माता–पिता को आज अनुपयोगी समझ बैठी? हाय–हाय ऐसा बौद्धिक दिवालियापन इस पवित्र भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर कभी नहीं आया जो अपने परम हितेषियों को भार समझने लग जाय।

हे गोवत्सों ! यही विपरीत बुद्धि का परिणाम है जिसके परिणामस्वरूप अनर्थ का अर्थ और अर्थ का अनर्थ माना जा रहा है। वास्तव में गोवंश की सेवा, पूजा, रक्षा, संवर्धन ही सभी प्रकार की आर्थिक समृद्धियों का प्रधान स्रोत हैं। वर्तमान की शोषक व संहारक पद्धति पर आधारित अर्थ व्यवस्था तो केवल दानवी बुद्धि द्वारा फैलाया हुआ मायाजाल का चर्म पात्र है जो भंयकर धोखा देकर किसी क्षण नष्ट हो सकता है। अनेकों के विनाश से कुछेकों का विकास करने का पथ प्राकृतिक न्याय के विरोध है। जो भविष्य में सबके महाविनाश का कारण बनेगा।

अतः हे पुत्रों ! तुम मेरे अपने हो इसलिये तुम्हें बताती हूँ कि सबके विकास व उत्थान में अपना विकास तथा उत्थान है, इस वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार करके और बात गहराई से समझकर सबके विकास व उत्थान का आधार मेरी संतान गोवंश की पूज्याभाव से उपासना, आराधना सेवा व संरक्षण को अपने जीवन में प्राथमिकता प्रदान कर स्वयं अनुभव करें। बस आज इतना ही कहूँगी।

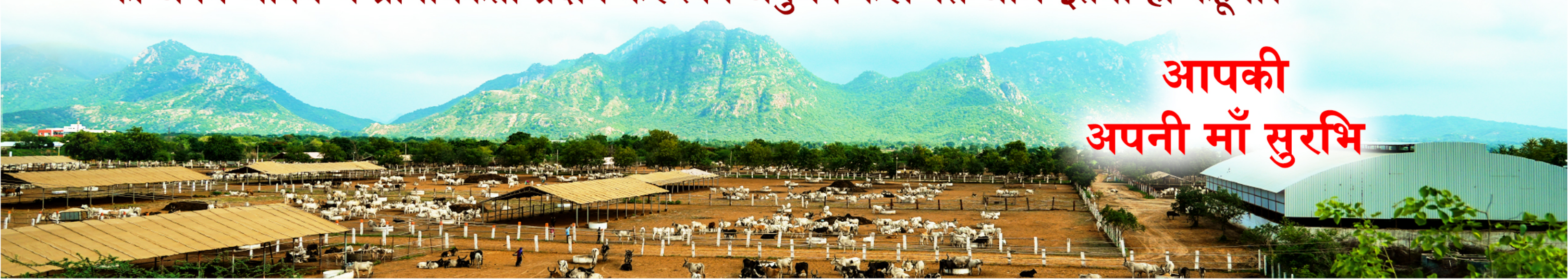

आपकी
अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः2

कामधेनु-कल्याण

अंक :1

चैत्र मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 अप्रेल–2025

१. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद** - परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज 02

२. **सर्व इच्छा की पूर्ति के लिये क्या उपाय करें-** पू. द्वाराचार्य स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज 07

३. **गीता ज्ञान** -पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज 10

४. **सनातन धर्म की जड़ क्या है** - पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज 13

५. **युवाओं के साथ मन की बात** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज 18

६. **गोकथा** - पू. ग्वालसंत स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज 21

७. **श्री भक्तमाल कथा** - पू. ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाश जी महाराज 24

८. **श्री मद्भागवत कथा** – गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज 26

९. **स्थानीय नस्लों को प्राथमिकता दें** - सम्पादक, अम्बा लाल सुथार 29

१०. **संस्था समाचार** - मार्च माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण 31

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य-20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गाय सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी

(श्री वेदलक्षणा गोसंदेश यात्रा 15.10.2021)

हमारे महापुरुषों ने कहा है कि भाई गोसेवा करने का भाव है तो सबसे पहले गोव्रत धारण करो। यहाँ जितने गोशालाओं के संचालक विराजे हैं, अन्य जो गोभक्त विराजे हैं, माताएँ विराजी हैं, बाल गोपाल विराजे हैं, आप सभी से निवेदन है कि गोव्रत की महिमा को समझो। गोव्रत का अर्थ है कि आप अपने भोजन में, अपनी उपासना में, औषधियों में वेदलक्षणा गाय के गव्यों का ही उपयोग करें। दूध लें तो केवल हमारी वेदलक्षणा गोमाता का, ऐसे ही घी, दही, छाछ, मिठाई भी भारतीय नस्ल की वेदलक्षणा गाय के ही उपयोग में लें। कदाचित कभी ये पदार्थ वेदलक्षणा गोमाता के नहीं मिलें तो इनके बिना ही काम चलायें, पर भैंस, जर्सी या अन्य किसी पशु के उपयोग नहीं करें। दीपक, हवन-यज्ञ करना है तो भी केवल वेदलक्षणा गोमाता के घी से ही करें, अन्य पशुओं के घी का दीपक या यज्ञ कहीं हो रहा हो तो उसका स्पर्श भी न करें, उससे दूर रहें।

आज हम ब्रह्माजी के मंदिर पर पूजन करने गऐ थे। गौओं के साथ एक शंकर पशु खड़ा था। उसको भी लोग गाय कहते हैं।पर वह गाय है नहीं।

गाय के लक्षण वेदों में बताए गये हैं। वेदों में जिन लक्षणों वाली गाय का स्वरूप बताया है, उसी गाय का गोमय, गोमूत्र पवित्र है, जीवन को बढ़ाने वाला है, रोगों को नष्ट करने वाला है। गाय शब्द जो है, वेद से और स्मृति से मिला है। हमारे वेदों ने, स्मृतियों ने, हमारे पूर्वजों ने, जिसको गाय कहा है, उस गाय का स्वरूप हम लोगों को समझना बहुत जरूरी है। गाय के रीढ़ की हड्डी में एक नाड़ी होती है, जिसका नाम है सूर्यकेतु नाड़ी। यह सूर्यकेतु नाड़ी सूर्य से सम्बन्ध रखती है। गाय की थुई (कुक्कुद) जो होती है, ठीक उसके और रीढ़ की हड्डी के संधि में ही यह नाड़ी रहती है। इस नाड़ी का सम्बन्ध सूर्य से होता है।

सूर्य की तीन प्रधान किरणें हैं। एक किरण तो समुद्र के खारे जल का शोषण करके ऊपर क्षोभमण्डल में ले जाती है और उसको मीठा बनाकर पुनः पृथ्वी पर बरसाती है। दूसरी किरण सम्पूर्ण प्राणियों को ओज प्रदान करती है व तीसरी किरण है गो किरण। उसका नाम ही गो है और वह गो किरण सीधी सूर्यकेतु नाड़ी के माध्यम से गाय में उतरती है। यह सूर्यकेतु नाड़ी एक तरह से उस गो किरण को पकड़ने, आकर्षित करने तथा ग्रहण करने का एक यंत्र है। उस किरण के द्वारा गाय के शरीर में स्वर्णयुक्त क्षार का निर्माण होता है जिसे स्वर्णपित्त क्षार कहते हैं। यह स्वर्णपित्त क्षार ही वह तत्त्व है जिसके कारण गाय को परम पवित्र, सत्व की सृजक, मांगलिक और कल्याणकारी माना गया है। यह केवल थुई वाली गाय के शरीर में ही होता है और गाय वही है, गाय उसी का नाम है और किसी का नाम गाय नहीं है। एक विशेषता और जो गाय के बाहरी लक्षणों में दिखती है वो यह कि गाय के गले के नीचे एक बड़ी गल कम्बल लटकती है। यों तो आदमी को कोई मारता-पीटता है तो घबराया हुआ वह भी छूटने के लिये कह देता है कि मैं तुम्हारी गाय हूँ। गाय कहने से वह गाय नहीं हो जाता। इसी प्रकार शंकर पशुओं को गाय कहने से वो गाय नहीं हो जाते। गाय तो केवल वही है जिसके पीठ पर बड़ी थुई हो, गले के नीचे गल कम्बल हो तथा शरीर में स्वर्णपित्त क्षार बने। वह स्वर्णपित्त

क्षार गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी आदि के माध्यम से आप हम सब लोगों को प्राप्त होता है।

आजकल जो दूध के लिए लोगों ने एक संकर पशु को पाल रखा है वह तो गाय है ही नहीं। उसके मल, मूत्र आदि तो दूषित है ही है, पर उसके दूध से भी अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। यह विदेश के लोगों ने भी जान लिया है और हमारे यहाँ के आरोग्य शास्त्री समाज ने भी जान लिया है, फिर भी दूध के लालच में सब अनर्थ हो रहा है। इसलिए भारत में अभी भी जर्सी काउ का विस्तार किया जा रहा है। उससे अनेक प्रकार के मनोकाय रोग उत्पन्न किए जा रहे हैं। उसकी सन्निधि से, उसके दूध, दही, घी से बचना चाहिए।

राजस्थान गोसेवा समिति की ओर से यह गोसंदेश यात्रा इसलिए है कि अगर हम स्वयं स्वस्थ रहना चाहते हैं और समृद्ध रहना चाहते हैं, आने वाली पीढ़ियों का हित चाहते हैं, उनके जीवन को लिए सुरक्षित रखना चाहते हैं तो हमें गोमाता का सहारा लेना होगा। राजस्थान के लोग स्वभाव से ही धर्मानुरागी हैं और गौओं के प्रति उनकी भक्ति और गोरक्षा प्रसिद्ध है। भगवान की कृपा से राज्य के समाज के साथ-साथ में राजस्थान का शासन भी अब गोसेवा के सहयोग में आया है। अत: जब शासन भी गाय के हित में निति बना रहा है और समाज में भी गौओं के प्रति सद्‌भाव विद्यमान है तो हमें हमारी यह अमूल्य निधि जो ईश्वर की करनी है इसको सुरक्षित रखकर इनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए रचनात्मक प्रयास करना होगा। उस रचनात्मक प्रयासों में सबसे पहला है गोव्रत धारण करना। सभी लोग गोव्रत धारण करें। व्रत पूर्वक गाय का दूध, दही, घी ही भोजन में लेगें और अगर गायका दूध, दही, घी आदि गव्य नहीं मिलेंगे तो अन्न पशुओं का दूध, दही, घी आदि नहीं लेंगे। ऐसे ही यथा सम्भव गोमय, गोमूत्र की खाद से उत्पादित अन्न ,फल, सब्जियों आदि लेंगे। ये यथा सम्भव प्राप्त नहीं हो सकते हैं तत्काल तो आप अगर मांग रखोगे तो किसान उस तरह का उत्पादन शुरू कर देगा।

गाय के गोमय से धरती का अन्न आरोग्य को बढ़ाने वाला होगा है और वह किसान को भी समृद्ध करेगा। धरती माँ भी किसान को आशीर्वाद देगी।जब किसान धरती को भोजन देगा तो धरती तृप्त होगी। जैसे गोमाता को चारा देने का पुण्य है ऐसे ही धरती माता को गाय का गोबर देना उससे 10 गुणा अधिक पुण्य है। ध्यान रखना जितना गाय को गोग्रास देने का पुण्य है उससे 10 गुणा अधिक पुण्य गाय के गोबर का ग्रास धरती को देने से होता है। किसान को यह गोमय गाय के बिना मिलेगा कैसे? इतनी सारी खेती है, इतने सारे लोगों को अनाज चाहिए, सबको स्वस्थ होना है तो वह गोवंश के बिना यह असम्भव कार्य है।

इसलिए सज्जनों दूध, घी आदि तो चलों मिले जितना भी मिले, बाहर से भी ला सकते हो परन्तु गोमय खाद बड़ी मात्रा में हमको चाहिए और इसके लिये गोवंश अधिक से अधिक संख्या में हो। कम से कम एक बीघा पर एक गोवंश हो तो ही धरती को गोमय खाद का पर्याप्त भोजन मिल सकता है। नागौर में जितने भी बीघा कृषि भूमि है, वन भूमि है कम से कम उतना गोवंश नागौर के लिए होना अनिवार्य है और गोमय चाहे मादा का हो या नर का हो धरती को दोनों ही पोषण देते हैं, उल्टा मादा से नर का गोमय अधिक शक्तिशाली होता है क्योंकि मादा की कुछ जीवनी शक्ति दूध में चली जाती है और नर के अन्दर से आने वाली सारी जीवनी शक्तिी गोमय में रहती है। अत: नर के गोमय से धरती को कहीं अधिक पोषण मिलता है।

इसलिए निवेदन है इस जिले में जितना गोवंश अभी है वो सब सुरक्षित हो और उनके गोबर का एक-एक कण धरती में, कृषि में और वन में गिरे। धरती को गोमय से पोषण मिले इसके लिए आवश्यक है कि सारे गोवंश का ठीक तरह से पालन हो,

सम्पोषण हो, सरंक्षण हो, उनके आश्रय और आहार का सही-सही प्रबंध हो। सैकड़ों बछड़े-नंदी सड़कों पर घूम रहे हैं। प्लास्टिक खा रहे हैं, दुर्घटनाग्रस्त होते हैं, कसाई उठाकर ले जाते हैं। आज देश में बैलों से कोई खेती नहीं करता। कभी ऐसा काल भी था जब एक-एक किसान के पास बैलों की पांच-पांच जोड़ियों हुआ करती थी। 4-5 दशकों पूर्वत तक ऐसी स्थितियों थी कि देश में बैलों से खेती होती थी और बैलों में हमारे यहां सबसे श्रेष्ठ बैल नागौर के होते थे। चलने में भी तेज, सुन्दर भी, स्फूर्तिवान भी और भोजन भी सबसे कम करता और घोड़े जैसे। पर आज बैलों से खेती नहीं होती है। खेती के नाम से अगर कोई बछड़े यहां से ले जाता है तो खेत में नहीं जाते वे कसाई के वहां ही जाते हैं।

इसलिए नागौर वासियों से प्रार्थना है कि यह जो भाव है कि बछड़े बाहर जावें और आज जा भी रहे हैं तो ये सब कत्लखाने भेजे जा रहे हैं। उनको कत्लखाने भेजने हो तो आप की मर्जी हम तो रोक नहीं सकते। इनको रोकने के लिये हमारे पास कोई न कलम है और न कोई राईफल है। हमारे पास तो ये शब्द है जो आपको कह रहे हैं, समझा रहे हैं। आपके ऊपर कोई उपकार रहे हैं, हजारों-हजारों पीढ़ियों से इस गोवंश ने उपकार किये हैं। इस धरती को जीवत रखा है, स्वस्थ रखा है। हमारे निर्वाह में भी इनकी प्रधान भूमिका रही है। भविष्य में भी यह गोवंश ही हमारा उपकार करेगा। गाय भूत वह भविष्य की माँ है।

आप ऐसे उपकार करने वाले प्राणी को इस समय अनुपयोगी समझ कर अगर तिरस्कार करते हैं, अपमान करते हैं, यह जानते हुए भी कि ये बछड़े यहां से जो ट्रकों में भरे जा रहे हैं वे निश्चित रूप से कत्लखाने जाएंगे, फिर भी उनको रोकते नहीं है अथवा उसका समर्थन करते हैं, उनको थोड़े से धन के लालच में बेचते हो तो भाई यह बहुत बड़ा अपराध है।मानवता का अमानवीय अपराध है। यह घोर अपराध हैं ऐसा अपराध तो राक्षस भी नहीं कर सकता। गाय हमारी माँ है और उसके वंश हमारे परिवार के बंधुजन हैं। अपने बंधुओं का रक्षण, पालन करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। गोवंश रहित परिवार, व्यक्ति- बन्धु रहित हो जाता है। अब सरकार ने भी यह बात स्वीकार की है कि बछड़ों का संरक्षण आवश्यक हैं। इसलिए राजस्थान सरकार मादा गोवंश जो निराश्रित घूमता है उनकी सेवा के लिए संचालित गोशालाओं को 9 महिने का अनुदान देती है, पर अगर नर गोवंश की नंदीशाला बनाकर उसका संचालन करें तो सरकार उसको 12 महिने अनुदान देगी।

यह गोसेवा बहुत बड़ा काम है- मनुष्यों के लिए, देवताओं के लिए, ऋषियों के लिए, वनस्पतियों के लिए, धरती के लिए, पवन के लिए, जल के लिए, सबके उपकार के लिए, सबके जीवन रक्षा के लिए। गोसेवा महान यज्ञ है, विराट कार्य है, इसमें करोड़ों-करोड़ों हाथ जनता के और सरकारों के सम्मिलित होगें तभी सफलता मिलेगी। इसको समाज और सरकार दोनों मिलकर ही कर सकते हैं। केवल समाज भी अकेला यह काम नहीं कर सकता और सरकार भी अकेली इसको नहीं कर सकती। यह एक सकारात्मक बात है कि राजस्थान सरकार राजस्थान जनता की सद्भावना के अनुसार साथ खड़ी हुई है। अब आप कमर कसो, प्रत्येक पंचायत समिति पर एक एक नंदीशाला बनाओ और उस नंदीशाला में समाज और शासन के सहयोग से उस पंचायत समिति के गावों में जितने भी निराश्रित नंदी है उनकी सेवा की व्यवस्था करो, जो गरीब गोपालक अपने बछड़ों को छोड़ देता है उनसे प्रार्थना करो कि वह बछड़ों को नंदीशाला में भेजें सड़क पर न छोड़ें। इस तरह जो नंदीशाला स्थापित हो उसका सम्पूर्ण गोमय है वह सब किसानों को प्राप्त हो।

इससे आगे की योजना पर काम हो रहा है। गोबर को परिष्कृत करके उसकी सुन्दर खाद बनाकर

जल्दी से जल्दी किसानों के कृषि में जाए उस तरह का एक अगला चरण वही है हमारा। हमारा पहला चरण है- गोवंश का संरक्षण हो, उसका आश्रय हो, आहार मिले, वह निराश्रित भूखा-प्यासा, बीमार सड़क पर नहीं भटके, वह भूख के कारण प्लास्टिक और अखाद्य पदार्थ न खाए, प्यास के कारण नालियों का गंदा पानी न पिए, वह अंधेरे में सड़कों पर घूमता हुआ दुर्घटनाग्रस्त न हो और न ही किसी को दुर्घटनाग्रस्त करे, वह अपनी भूख मिटाने के लिये आपके खेत में घुसकर आपके लाठी-डण्डे न खाये और अंत में वह कसाइयों के क्रूर हाथों में न जाने पाए। यह पहली बात है, यह सब जगह होने के बाद अब दूसरे चरण में तुरन्त ही गोमय के कण-कण का सदुपयोग हो। लोगों को सात्त्विक जीवनी शक्ति से सम्पन्न भोज्य पदार्थ मिले यह दूसरे चरण का कार्य है, यह जल्द होगा।

पहले चरण में आपका सहयोग चाहिए। आप नंदियों और बछड़ों के संरक्षण के लिए नंदीशाला बनाएं। यहां की जो हमारी गोशाला है बीड़ गोशाला उसके संचालकों से अनुरोध है कि आपके पास 20 बीघा भूमि है आप कुचामन की नंदीशाला के लिये आज की सभा में संकल्प लें। कम से कम एक नंदीशाला कुचामन में आज हो जाए। तो हमारी आज की सभा सार्थक होगी। हमारे जो गोभक्तों का प्रयास है यह सार्थक होगा। इस धरती के जो पूर्वज हैं, यहाँ जितने देवता हैं, वे सब प्रसन्न होंगे, सन्तुष्ट होंगे और आप पर आशीर्वाद की वर्षा करेगें। यह नंदी धर्म है, इनकी रक्षा धर्म की रक्षा है, साक्षात धर्म स्वरूप नंदी है, धरती को धारण करता है, अगर यह नहीं रहेगा तो, धरती भले ही रहे पर उनमें जीवन नहीं रहेगा। एक नंदीशाला की स्थापना संचालन की अपेक्षा है यहां के गोभक्तों से।

दूसरा निवेदन है कि यहां बीमार गोवंश की चिकित्सा के लिए एक गो चिकित्सालय बने। यद्यपि सभी गोशालाओं में एक व्यवस्था बने, एक भाग स्वतंत्र रूप से गो की चिकित्सा के लिए हो। गायों की चिकित्सा का बहुत बड़ा पुण्य है। शास्त्रों में गोचिकित्सा में एक परम् पुण्य मिले यद्यपि उनको चारा देना, दाना देना, खुजाली करना आदि सभी पुण्य है पर चिकित्सा को परम पुण्य माना गया है। अगर आप चिकित्सालय का संकल्प करें तो श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा कि ओर से हमारे यहां ट्रस्टी आए हुए हैं वे इसकी स्थापना के लिए अंश रूप में एक छोटा सा चेक देंगे। 20-22 लाख का एक छोटा सा प्रोजेक्ट है चिकित्सालय का।

नंदीशाला और गोचिकित्सालय ये दो यहाँ पर प्रारम्भ हो यह आपसे अपेक्षा है। यह इसलिए है कि राजस्थान गोसेवा समिति का जो लक्ष्य है वह पूरा इसी माध्यम से होगा। राजस्थान गोसेवा समिति यह चाहती है कि राज्य में एक भी गोवंश निराश्रित न घूमे। सबको आश्रय, भोजन और समय पर चिकित्सा मिले। उनका यह पहला लक्ष्य है। दूसरा लक्ष्य है कि राजस्थान का किसान गरीब न हो, वे आत्महत्या न करें, उनकी भूमि बंजर न हो, वे समृद्ध होवें। इसलिए हमारी कृषि भूमि में गाय के गोमय का खाद जाए।ये दोनों बातें प्रधान रूप से हैं। गाय और किसान दो अलग-अलग नहीं है।किसान यह सोचे कि गाय को मारकर काटकर भगा देंगे और हम समृद्ध हो जायेंगे तो यह कभी सम्भव नहीं हो सकता। धरती अभिशाप देगी, गाय के बिना धरती जीवित ही नहीं रह सकती। गाय को किसान ही रख सकता है, किसान के वहीं गाय रहेगी। गोशालाएं तो आपात धर्म है। गोपालन, गोसंरक्षण और गोरक्षा का वास्तविक समाधान तो किसान का घर है, किसान की खेती है। गाय किसान के घर में आयेगी तो अपने आप सुरक्षित हो जायेगी।

व्यापारियों के पास कितनी गाय रहेगी? गोशालाओं के माध्यम से कितनी गायें रहेगी? क्या मजदूर उनकी सेवा करेगें? मजदूर कभी सेवा नहीं करते वे तो कर्म करते हैं। सेवा तो सेवक करता है

और सेवा अपनत्व से होती है। इसलिए जो गाय अपनी मानेगा वही सेवा कर पायेगा। गोशालाओं के संचालन में बहुत कठिनाई है। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि हाथ से दान तो कर सकते हैं पर सेवा के लिये समय नहीं दे सकते। अभी-अभी शीलापूजन हुआ है वो गो चिकित्सालय के लिये हुआ है। इसका नाम वेदलक्षणा गोचिकित्सालय रखा गया है। इसके लिये दो संचालक मंच पर पधारें और न्यास की ओर से एक चेक प्राप्त कर लें। आप सभी को बहुत बहुत साधुवाद। नारायण, नारायण, नारायण!

पृष्ठ 28 से आगे.....

........दृष्टि करके उसकी आयु का हरण कर रहे हैं किसी की ओर दृष्टि करके उसकी आयु बढ़ा रहे हैं यही तो हुआ और क्या हुआ। कौरवों की ओर देखकर के उन्होंने कौरवों की आयु का हरण कर लिया और पांडवों की ओर देखकर के पांडवों की आयु की वृद्धि कर दी। अर्जुन तो एक मात्र बहाना है, निमित्त मात्र है। वह परमात्मा इस संसार को चला रहा है। ईश्वर: सर्वभूतानामं हृद्देशेऽअर्जुन तिष्ठति। सबके हृदय में बैठ करके ईश्वर उनको यंत्र की तरह चला रहे हैं। वह हमारे हृदय में बैठकर के हम सबको यंत्र की तरह चल रहा है। ऐसे भगवान श्री कृष्णचंद्रजी को हम सब लोग प्रणाम करते हैं।

श्रीमद्भागवत के आचार्य श्री सुखदेवजी उनकी स्तुति: यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतेंत्यं द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव । पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु: तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ।य: स्वानुभावमखिल श्रुतिसारमेकं अध्यात्मदीपं अतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।संसारिणां करुणयाऽऽह पुराणगुह्यं तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् । नारायणं नमस्ँत्य नरं चौव नरोत्तमम् ।देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।

वे सुखदेवजी कैसे हैं? जिनका अभी कोई संस्कार हुआ नहीं, जन्म संस्कार होता है, नामकरण संस्कार होता है, ...शेष अगले अंक में

भगवान के न्याय पर कभी संदेह न करें

कई लोग सोचते हैं कि पाप करने वाले भी सुखी क्यों हैं? महाराज हम इतना धर्म करते हैं फिर भी हम तो कष्ट में हैं। आप लोगों के मन में कभी कभी ऐसी बात आती है तो उसे इस प्रत्यक्ष उदाहरण से समझें। जिसको फांसी की सजा सुनाई जाती है उसा कैदी का बेरक बदल दिया जाता है। अच्छे कमरे में उसको ले जाया जाता है, अच्छे कपड़े उसको पहनाये जाते हैं, अच्छा खाना उसे दिया जाता है, दिन में 3 बार डॉक्टर उसका चैकअप करता है उसका बहुत ध्यान रखा जाता है। यहाँ तक कि उसको पूछकर उसकी इच्छा पूरी की जाती है।

अगर यह देखकर आम कैदी के मन में आ जाय कि इसको इतनी सुविधाएं क्यों दी जा रही है मुझे भी दी जाय। अरे भाई उसको तो इसलिये दी जा रही है क्योंकि वो तो फांसी के फंदे पर लटकाया जाने वाला है और आप छूट जाने वाले हो, फिर से उन्मुक्त आकाश में विचरण करोगे।

इसलिये केवल यह देखकर कि मेरी दशा थोड़ी ठीक नहीं है, भगवान के न्याय पर संदेह नहीं कर लेना चाहिये। भगवान का बहुत सूक्ष्म न्याय है और वे कभी अन्याय करते ही नहीं। भगवान का मतलब ही है जो सारे संसार के प्रत्येक व्यक्ति को जानते हैं, उसके कर्मो को जानते हैं, उनका विश्लेषण कर उस अनुसार उसे उचित समय पर उचित फल प्रदान करे, उसे न्याय दे। भगवान के किसी भी निर्णय में कभी हमारे साथ अन्याय हो ही नहीं सकता। पूरी समझ नहीं होने के कारण हमें ऐसा लगता है कि पापी लोग मौज कर रहे हैं। जो अभी मौज करते दिखते हैं वो उनकी पहले की कमाई खा रहे हैं, अब जो बुरा कर रहे हैं उसका भी फल समय आने पर मिलेगा। उनके यहाँ एक एक पाई का हिसाब रहता है। उनके राज्य में न किसी को पाई अधिक और न किसी को तिलभर कम मिलता है।

सर्व इच्छा की पूर्ति के लिये क्या उपाय करें

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज)

आजकल लोग बड़े परेशान हैं इच्छाओं की पूर्ति के लिए। इसके लिये वे किसी ज्योतिषी के पास, किसी तंत्र वाले के पास, किसी मंत्र वाले के पास, किसी गोली-डंडा, ताबिज और क्या-क्या चीजें होती हैं- जैसे लाल धागा, पीला धागा, जानें क्या-क्या टी.वी.में प्रचार आता है। ऐसे लोगों के पास भटकते हैं। अरे! नारायण गुरुदेव भगवान ने तो साक्षात् कामधेनु प्रदान कर दी है। किसी के द्वार पर जाने की आवश्यकता क्या है? यह गोमाता साक्षात् कामधेनु है। हृदय से भगवत् भाव करते हुए गोमाता की सेवा करो। सारी इच्छाएँ गोमाता की सेवा से सम्पन्न हो जायेगी। विद्या की प्राप्ति गाय से, बुद्धि की प्राप्ति गाय से, धन की प्राप्ति गाय से, पुत्र की प्राप्ति गाय से, पुत्री की प्राप्ति गाय से, ब्रह्म विद्या की प्राप्ति भी गाय से, कहाँ तक कहें, भगवान की प्राप्ति भी गाय से।

स्वामीजी उपनिषद् में एक कथा है कि गौतम ऋषि के पास एक बालक आया। बोले कि हमको अपने गुरुकुल में भर्ती कर लीजिए। हमारा जनेऊ संस्कार कराकर हमको वेद पढ़ाएँ। गुरुजी बोले तुम्हारा परिचय नाम, गौत्र बताओ। उसने कहा मेरी माताजी, संतों की और गोमाता की सेवा में लगी रही। उनको पता नहीं चला। उन्होंने अपने पति से पूछा नहीं। बीच में मेरे पिताजी पधार गये। मेरी माताजी को पता नहीं है कि हम किस गोत्र के हैं? बस इतना जरूर है कि हम ब्रह्माण हैं और मेरी माता का नाम जाबाला है। मेरा नाम सत्यकाम है। गोतमजी बोले- बिलकुल ठीक, तुम ब्राह्मण ही हो। क्योंकि इतना निश्चल निष्कपट भाव से ब्राह्मण ही अपने हृदयकी बात, मनकी बात कह सकता है। गौतम ऋषि ने उसका यज्ञोपवित संस्कार करवाकर उसे संध्या गायत्री सीखाकर के उसे सौ गैया (गोमाता) दे दी और कहा कि अब तुम इन गैयाओं को ले जाओ। सौ गैयाओं को चराओ और अपना नित्य समीधा दान करना, अग्निहोत्र करना। गोमाता सुखी रहे, प्रसन्न रहे, ऐसा प्रयास भीतर से करना। अपने भीतर से अपना निश्चय करना कि गोमाता प्रसन्न रहे, सुखी रहे और वह गुरु आज्ञा पाकर प्रेम से गोचारण करने लग गया।

गैया चराते-चराते कही वर्ष व्यतीत हो गए। महाराज! उस बेचारे ने गिनती भी नहीं की कभी कि अभी हमारी गायों की संख्या एक हजार हुई है, या नहीं। क्योंकि गुरुजी ने कहा था कि जब एक हजार गायें हो जाय तब तुम गायों सहित लौट कर कर हमारे निकट आ जाना। आज उसकी गायों की संख्या एक हजार पूरी हो जाने पर गायों के स्वामी वृषभ ने डहकते हुए सत्यकाम के निकट आकर कहां ब्रह्मचारी सत्यकाम में तुम्हारी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। हमारी संख्या अब एक हजार हो चुकी है। इसलिए अब तुम विलम्ब मत करो। हमको गुरु महाराज के आश्रम में ले चलो।बालक सत्यकाम ने कहा ठीक है हम महर्षि गौतम के आश्रम में ले चलने के लिए तैयार हैं।

पर सत्यकाम को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह वृषभ मनुष्यों की भाषा में कैसे बोल रहा है। उसने कहा बेटा आश्चर्य मत करो। मैं तुमें ब्रह्म विद्या के प्रथम पाद का उपदेश करता हूँ। तू गोसेवा करते -करते ब्रह्मज्ञान का अधिकारी हो गया है। उस वृषभ ने सत्यकाम को ब्रह्मविद्या का उपदेश किया और सत्यकाम प्रसन्न होकर ब्रह्मविद्या के प्रथम पाद का उपदेश प्राप्त करके चल पड़ा। दूसरे दिन जहाँ पड़ाव किया वहाँ प्रात: काल की बात है, वह सरोवर में खड़े होकर संध्या कर रहा था। उसी समय एक मंदु नाम के पक्षी ने कहा कि तेरी गुरु सेवा से, गऊ सेवा से हम संतुष्ट हैं, ब्रह्मविद्या के द्वितीय पाद का मैं तुम्हें

उपदेश करता हूँ और उस पक्षी ने उसे ब्रह्मविद्या के द्वितीय पाद का उपदेश किया।

तीसरे दिन के पड़ाव में सत्यकाम अग्निहोत्र करने बैठा था तब भगवान अग्नि प्रकट हो गये। तुम उत्तम गोसेवक हो। तुम्हारी गोसेवा से, गुरु निष्ठा से हम प्रसन्न हैं। ब्रह्मविद्या के तीसरे पाद का हम तुझे उपदेश करते हैं और उसे अग्नि ने ब्रह्मविद्या के तृतीय पाद का उपदेश कर दिया। भगवान अग्नि ने कहा कि ब्रह्मविद्या के चार चरण होते हैं। तीन चरणों का उपदेश हो चुका है। अब चौथा चरण बाकी रह गया। बिना गुरु से साक्षात् उपदेश प्राप्त किए ब्रह्मविद्या का उपदेश पूर्ण नहीं होता है। इसलिए चौथा चरण ब्रह्मविद्या का है वो तुम्हारे गुरुदेव श्री महर्षि गौतम तुम्हें प्रदान करेगें। यह सुनकर वह प्रसन्न होता हुआ गुरु महाराज की सन्निधी में पहुँचा और गुरुजी को जैसे ही साष्टांग किया तथा कहा कि गुरुजी आपने चार सौ गायें हमको दी थी तब कहा था कि जब ये गायें एक हजार हो जाय तब आ जाना। गुरुजी ये गायें एक हजार हो चुकी हैं। आप गायों को स्वीकार करें और हमें आज्ञा प्रदान करें कि अब मैं आपकी क्या सेवा करूँ?

गुरुजी ने सत्यकाम की ओर देखा तो कहा अरे! तेरे मस्तक की जो चमक है वह तो एक महान ब्रह्मज्ञानी की तरह दिखाई पड़ रही है। वत्स ब्रह्मविदिव वै सौम्य भासि। तुम्हारा चेहरा ब्रह्मवेता की तरह दिखाई दे पड़ रहा है। यह तुझे ब्रह्मविद्या किसने प्रदान की? सत्यकाम ने सारी बात सुनाई और कहा महाराज आपकी कृपा के बिना ज्ञान भी पूर्ण कहाँ होगा? गुरुजी ने उसको ब्रह्मविद्या के चौथे पाद का उपदेश दिया। अब सत्यकाम महान ब्रह्मज्ञानी हो गये। तो हम आपसे पूछते हैं कि ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मविद्या भी किसकी कृपा से प्राप्त हुई? गौमाता की कृपा से। तो संसार की सारी कामनाओं को पूर्ण करने वाली गाय, सम्पूर्ण धर्म को प्रदान करने वाली गाय है। ध र्म का मूल गाय है, धर्म की जड़ गाय है। कोई भी धार्मिक क्रिया गोमाता के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती। आप देवतों का पूजन करेंगे तो पंचामृत की जरूरत पड़ेगी। कहाँ से आयेगा पंचामृत? पंचगव्य की जरूरत पड़ेगी। कहाँ से आयेगा पंचगव्य? यज्ञ में घी की आहुति देंगे तो घी कहाँ से आयेगा? आज बाजार के डेयरी वाले दूध, दही, घी का प्रयोग हम कर रहे हैं। इसलिए हमारी देव पूजा भी सफल नहीं।

हमारी देव पूजा से देवताओं का बल बढ़ना चाहिए। लेकिन आसुरी शक्तियों बढ़ रही हैं। देवी शक्ति घट रही है। क्यों? उसका कारण है कि विशुद्ध भारतीय देशी गाय के दूध, दही, घी से हम देवताओं के यजन नहीं कर रहे हैं। पितरों का श्राद्ध करना होगा। बिना गाय के पितरों का कव्य नहीं होगा। देवताओं का हव्य नहीं होगा। श्राद्धीय तर्पण भी नहीं हो सकता। अतिथि का सत्कार, संतों की सेवा भी बिना गाय के नहीं हो सकती। भगवान की सेवा भी बिना गाय के नहीं हो सकती। इसलिए जहाँ गाय है, वहाँ धर्म है। जहाँ धर्म है, वहाँ श्री कृष्ण है! गीताजी में संजय ने कहा है:- यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। हमारी एक निश्चित मति है, जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं, जहाँ उनके निज सखा गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन हैं, वहीं श्री है, वहीं विजय है, वहीं ऐश्वर्य है।

महाराजजी! इसी प्रकार से जहाँ गाय है- यत्र वेही सुरभिदेवी तत्र योगेश्वर हरिः। जहाँ सुरभि देवी गोमाता है वहाँ भगवान श्री हरि हैं। जहाँ भगवान श्री हरि हैं वहीं सम्पूर्ण धर्म है। जहाँ सम्पूर्ण धर्म है वहीं अर्थ है। जहाँ धर्म व अर्थ दोनों हैं, वहीं कामनाओं की पूर्ति है। जहाँ धर्म, अर्थ और काम तीनों ठीक हो गये, वहीं मोक्ष है। देखिए! सम्पूर्ण धर्म गाय में और सम्पूर्ण अर्थ गाय में। सम्पूर्ण धर्म और अर्थ गाय में होने से समस्त कामनाओं की पूर्ति भी गाय से।

कामनाओं की पूर्ति के लिये क्या करें? गाय

से कामनाओं की पूर्ति कैसे और किसकी होगी? तो कामनाओं की पूर्ति गाय की सेवा से होगी और जो सेवा करेगा उसी की होगी। वेदलक्षणा गोमाता साक्षात् कलपतरू है। हम इस गोरूपी कलपतरू के पास रहकर जब उसकी श्रद्धाभाव से सच्ची सेवा करेंगे तो हमारे भीतर जो कामनाएं हैं, अच्छे संकल्प हैं उनकी पूर्ति गोमाता की कृपा से होगी। शर्त यह है कि गोसेवा सच्ची हो और हमारी कामना किसी के अहित की न हो। कामनापूर्ति का इससे सरल व शर्तिया साधन और क्या हो सकता है?

.पृष्ठ 23 का शेष .....की खाड़ी में डुबकी लगानी पड़ेगी या बचने के लिये धर्मांतरण करना पड़ेगा, अपने आपको बदल देना पड़ेगा। एक आहट हो रही है वो बहुत खतरनाक है। जो लोग कभी ए.सी. गाड़ियों, ए. सी. कार्यालयों, ए.सी. आश्रमों से बाहर नहीं निकले वे तो देश को चला रहे हैं। कभी बाहर निकलकर देखो तो सही देश में गोमाता के साथ हो क्या रहा है? एक दायरे में रहकर बातें करते हैं, घरों से, मठ मंदिरों से बाहर निकल करके तो देखो। विचार करें- क्या इसमें हम कुछ नहीं कर सकते? सभी ऐसे हाथ पर हाथ ध रे बैठे रहेंगे, भक्तों को धर्म की मीठी-मठी कथाएं कहकर लुभाते रहेंगे तो एक दिन सब कुछ लुट जायेगा। जो हो रहा है वो बहुत खतरनाक हो रहा है। ये दुष्ट सब एक है, गोमाता का वंश खत्म कर रहे हैं। अगर हम लोग बात करें तो कल डग के आसपास से समाचार आया कि एक गाड़ी में बहुत सारे नंदियों को भरकर के ले जा रहे हैं। कुछ वीर बहादुर गोरक्षकों ने अपने प्राणों की परवाह किये बिना 200 किलोमीटर तक पूरी रात पीछा करते रहे पकड़ में नहीं आये। जब कसाइयों की गाड़ी का टायर फटा तब गाड़ी पकड़ में आई और गोवंश को उतरकर सुरक्षित गोशाला में पहुंचाया। मजे की बात देखो गोमाता के प्राण बचाने वाले अधिकतर गोरक्षक भी क्षत्रीय ही थे। गोमाता की रक्षा करना क्षत्रीय का धर्म है।

....पृष्ठ 20 का शेष....समय मेरे मन में मेरे माता-पिता का जीवन चल रहा है और अगर आपने उनके बारे में बोलने का कह दिया तो मैं रो पडूंगा। आंसू यहां तक आये हुए हैं। हर व्यक्ति के माता पिता ऐसे ही होते हैं। मैं चाहता हूं आप भी आने वाले समय में माता-पिता बनेंगे और बनना ही है। किसी को बाबाजी बनने की जरूरत नहीं है। जितने बन गए बहुत है। अभी 5000 कुंभ में और बन गए तो बहुत है इतने। आप अपने कर्तव्य का पालन करिए। आपके परिवार की वृद्धि होनी चाहिए लेकिन आपका जीवन ऐसा होना चाहिए कि आपके बच्चे याद करें तो उनकी आंखें ऐसे ही भरनी चाहिए। ऐसा जीवन आपको बनाना पड़ेगा। सुनो तो दूसरी बात यह है कि आपको अपने माता-पिता के बारे में सब पता होना चाहिए। आप कभी उनके पास बैठकर उनके जीवन के बारे में पूछो तो सही आपने कैसे क्या किया? आप कैसे थे, क्या थे? मैं जानना चाहता हूं, ऐसी जिज्ञासा करें तो वे कुछ बतायेंगे। कुछ-कुछ के माता-पिता कभी-कभी बोल देते हैं- हम तेरे जितने थे तब ऐसे जीते थे, हम ऐसे करते थे। लेकिन वह चीज एक आवेश में बोली गई होती है तो वह एक सिर्फ डांट का हिस्सा बनकर रह जाती है। सिर्फ वह बात नहीं, अलग से आपने देखा भी देखा होगा? और कुछ क्या होता है कि हमने जो देखा उसको समझा नहीं, क्योंकि उस समय समझ नहीं थी, इस ओर हमारा ध्यान ही नहीं गया।

अब मैं मेरे मम्मी-पापा की बात बताता हूं मेरे पिताजी मंगलवार को हनुमान जी के मंदिर जाते थे माताजी को साथ लेकर स्कूटर पर, तो दादा जी से अनुमति लेते थे कि मैं हनुमान जी के मंदिर जाकर आता हूं। हनुमान जी हमारे घर के इष्ट हैं, परिवार में इष्ट हैं तो दादा जी अनुमति दे देते थे कि ठीक है जाओ। हम कहते कि हम भी साथ चलेंगे तो पिताजी मना कर देते कि कोई जरूरत नहीं पढ़ाई करो। तो हम रोने लगते, तो कहते ठीक है..*शेष अगले अंक में*

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

गीता शास्त्र ने भारतीय अध्यात्मिक परम्परा में एक विशिष्ठ स्थान लिया है। हम किसी कथा स्थल, मण्डप आदि में जाते हैं तो बाहर एक तरफ लिखा होता है प्रवेश और जब अन्दर जाते हैं तो वहाँ भीतर लिखा होता है प्रस्थान। हम सब इस संसार में आये हैं, प्रवेश कर चुके हैं और यह संसार बड़ा विलक्षण है। नित्य बदलने वाला, नित्य परिवर्तनशील संसार है। भगवत गीतामें संसार की परिभाषा भगवान ने स्वयं ने दी हैं- दुखालयम् अशाश्वतम्, अनित्यम असुखं लोकं। यह संसार दु:खों का घर है, नश्वर है, अस्थाई है। हम संसार में आकर सोचते हैं कि यहाँ से हम कैसे निकलें। प्रवेश तो कर ही चुके हैं, प्रस्थान करने के लिये हमारे मुनि ऋषियों ने प्रस्थान के मार्ग बता दिये हैं। इसके लिये मुनि ऋषियों ने 3 शास्त्रों के नाम दिये हैं जिन्हें प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। श्रीमद्‌भगवत गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों को सामूहिक रूप से प्रस्थानत्रयी कहा जाता है जिनमें प्रवृति और निवृति दोनों मार्गो का तात्विक विवेचन है। ये वेदान्त के 3 मुख्य स्तम्भ माने जाते हैं। इसमें गीताजी को स्मृति प्रस्थान, उपनिषदों को श्रुति प्रस्थान और ब्रह्मसूत्र को न्याय प्रस्थान कहा जाता है।

उपनिषदों का सार भगवद्‌गीता है। गीता के महात्म्य में लिखा है:

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन: ।
पार्थोवत्स: सुधीर्भोक्त दुग्धं गीतामृतं महत्।।

अर्थ: सभी उपनिषद गाय है और उनको दुहने वाले गोपाल नंदन भगवान श्रीकृष्ण है। पार्थ अर्थात् अर्जुन उस दूध रूपी सुधीर को भोगने वाले/पीने वाले हैं जो कि गीता का महान अमृत है।

भारतीय वेदलक्षणा गाय के दोहन करने हेतु बछड़े की जरूरत होती है। जर्सी आदि पशुओं को तो बिना बछड़े ही दुह देते हैं और बछड़े एक पाईप लगा होता है उससे दूध पीते हैं। भारतीय देशी गाय को दोहने वाले की जरूरत होती है जबकि जर्सी आदि को यंत्रों से दुहा जाता है। यहाँ उपनिषद गाय हैं, दोहने वाले भगवान श्रीकृष्ण हैं और एक बछड़ा है वो है पार्थ अर्थात् अर्जुन। दूध क्या है, गीता रूपी जो अमृत प्रकट हुआ वो दूध है। हम यहाँ बैठे हैं गीता रूपी अमृत को पान करने के लिये।

हमारे वैदिक परम्परा में हम पंचामृत पान करते हैं। मंदिरों में पंचामृत अभिषेक होता है। हमें तो सुअवसर मिलता है जब हम गुरुदेव के जगन्नाथपुरी आश्रम में निवास करते हैं तो रोज वहाँ सुबह स्नान करने के लिये गोबर और गोमूत्र मिल जाता है। हम रोज गोबर लगाकर गोमूत्र से स्नान करते हैं और प्राशन के लिये पंचामृत मिल जाता है। पंचगव्य में वेदलक्षणा देशी गाय के दूध, घी, दही, गोबर, गोमूत्र और कुशा से भीगा हुआ पानी मिलाते हैं। कभी-कभी पंचामृत हो जाता है जिसमें थोड़ा शहद, गुड़ मिला देते हैं। हम जानते हैं कि हमारे भारतीय सनातन परम्परा में तो गंगाजल को भी अमृत मानते हैं।

भगवद्‌गीता के अनेक नाम है- दुग्धामृत, गीतोपनिषद। उसको पान करने वाले कौन है? सुधी: भोक्ता। दूध पियो, दूध पचाने के लिये ताकत चाहिये। भोजन में घी लो लेकिन उसे भी पचाने के लिये ताकत चाहिये। तो भगवद्‌गीता रूपी दुग्ध अमृत को पचाने के लिये भी ताकत चाहिये। गीताजी को पचाने वाले सुधी होते हैं। सुधी शब्द में दो भाग हैं- सु और धी। धी शब्द बुद्धि वाचक है और सु मतलब सुन्दर। सुधी मतलब जिसकी बुद्धि सुन्दर हो।

हम सब मनुष्य हैं। हम सबको भगवान ने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि चतुष्टकरण दिये हैं। हमारा मन किधर जाता है, हमारी बुद्धि कहाँ लग रही है, हम जब विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में बुद्धिजीवियों के सत्र में जाते हैं भारत में तो लोग प्रश्न पूछते हैं। देखिए भारत इतना महान राष्ट्र

है, भारत की संस्कृति, भारत की परंपरा, भारत का इतिहास अनोखा है। अगर भारत की दशा आज हम जो देख रहे हैं- भ्रष्टाचार हो, दुर्नीति हो, जो कुछ भी अच्छा नहीं है वो क्यों? भ्रष्टाचार करने वाले दुर्नीति, करने वाले वे सब उच्च शिक्षित है। बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी से पढ़े हुए, बड़ी-बड़ी डिग्रियां लिये हुए लोग हैं। किसी भी क्षेत्र में हो- शासन तंत्र में हो राजनीति में हो, व्यापार में हो, सब जगह हमको यही दशा मिल रही है। कहां गलती हो गई? सब ऐसे क्यों बन गए?

उनमें बुद्धि तो है लेकिन सुंदर बुद्धि नहीं है जहां सुंदर बुद्धि होती है वहां आत्मविकास के साथ-साथ राष्ट्र के विकास और सृष्टि के संरक्षण के लिए व्यक्ति को सजग होता है। देखिए भगवत गीता में हम बोलते हैं सुधि भोक्ता। हम सुदी हैं क्या? हमारी बुद्धि कहां है? अगर बुद्धि सुन्दर होती तो फिर राष्ट्र और सृष्टि के बारे में पहले सोचते, हमारे व्यक्तिगत लाभ के लिये भ्रष्टाचार कैसे करते? गोमाता के लिये शासन चलाने वाले लोगों के मन में इतनी दुर्निति कैसे होती? इसलिये सुधी तो नहीं है।

भगवत गीता अमृत है। अभी हम थोड़ा भगवत गीता के अंदर प्रवेश करेंगे।

श्री परमात्मने नमः

अथ श्रीमद्‌भगवत गीता। अथ प्रथमो अध्याय।

धृतराष्ट्र उवाचः-

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में इकट्ठे हुए युद्ध की इच्छावाले मेरे और पाण्डुके पुत्रों ने भी क्या किया?

धृतराष्ट्र का एक अर्थ हमने किया है स्वयं परमात्मा है और दूसरा अर्थ किया है मन। मन प्रश्न पूछता है। सुदी जिसकी बुद्धि शुद्ध सुंदर हो, जिसने गीता अमृत पान किया हो, जो गुरु भक्त हो, जिसका मन, बुद्धि, इंद्रियों संयत हो, वो मन संजय को पूछता है कि भाई संजय धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र में युद्ध करने की इच्छा रखने वाले मेरे पुत्रों और पांडु के पुत्रों ने समवेत होकर क्या किया? प्रश्न अतीत काल में है- क्या किया? हम धृतराष्ट्र के साथ धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के रूप में शरीर को तीन भागों में विभाजित किये हैं। और इसमें कहाँ कहाँ कौरव और पांडव है- मामका च पांडवा च की विवेचना हम करेंगे।

कौरव कौन है? पांडव कौन है? प्रश्न तो सहज है। प्रश्न में तथ्य है। हम गीता अध्याय 1 को पुनः विचार हेतु रखते हैं। भगवत गीता में जब युद्ध शुरू होने वाला था तब दोनों सेनाओं का शंखनाद, वाद्यनाद हो चुका था, उस समय अर्जुन ने भगवान को बोला- सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत। मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य रख दो। यहाँ थोड़ा विचार कर लीजिये- एक तरफ कौरव लोग है 18 अक्षहोनी सेना के साथ, दूसरी तरफ पाण्डव लोग है 11 अक्षहोनी सेना के साथ।

किसके साथ मेरे को युद्ध करना है, मैं देखना चाहता हूँ यह अर्जुन ने भगवान को कहा। तो भगवानने रथको कैसे खड़ा किया, इसमें बड़ी गहराई है। रथ को भगवान दोनों सेनाओं के मध्ये में ले आये और आप सोच रहे होंगे कि कौरवों की तरफ करके खड़ा कर दिया होगा। पर ऐसा नहीं किया भगवान ने। रथ को इस तरह खड़ा किया कि एक तरफ कौरव दिखे और दूसरी तरफ पांडव दिखे। फिर भगवान ने कहा- उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनीति। हेपार्थ! इकट्ठे हुए इन कुरूवंशियों को देख। भगवान ने कहा तुम दोनों तरफ देख लो। कुरु कौन है? दोनों। दुर्योधन आदि व युधिष्ठर आदि सब कुरु है। कुरु शब्द क्रियात्मक होता है-करो। हम सब यहाँ बैठे हैं, यहाँ कुरु हैं। हम कुछ न कुछ करने के लिये आये हैं। क्या करने के लिये आये है? मैं विद्यार्थी हूँ, पढ़ने के लिये आया हूँ, मैं शिष्य हूँ गुरु पदों का अनुशरण करने के लिये आया हूँ। मैं पुत्र हूँ, मैं पिता हूँ, मैं पति हूँ, मैं पत्नी हूँ, मैं नागरिक हूँ, मैं भारतीय हूँ आदि आदि सब इस संसार में कुछ न कुछ करने के लिये

आये हैं। क्या करने के लिये आये हैं? देखिये हम जब संसार में आने से पहले मां के गर्भ में थे तो भगवान से प्रार्थना की थी कि हे भगवान! गर्भ बहुत कष्ट कारक है, इस बार तो संसार में जाकर केवल आपका भजन ही करूंगा, फिर लौटकर गर्भ में न आना पड़े।

हमारे तीन शरीर है- स्थूल, सूक्ष्म और कारण और उनके बीच में आत्मा है। स्थूल शरीर जन्म होता है, मरता है। एक बार स्थूल शरीर की मृत्यु होती है तो उसमें से सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर और आत्मा जिसे मिलकर अतिवाहिक शरीर कहते है, इस ृशरीर से निकलकर मातृगर्भ में प्रवेश करता है। सूक्ष्म शरीर में 10 इंद्रियों, 5 प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त जो पूर्व जन्म में था, उसी को लेकर हम गर्भ में प्रवेश करते हैं। हम गर्भ में रह गये, वो ही मन है, वो ही बुद्धि है, वो ही अहंकार है, वो ही चित्त है। हम सोचते हैं कि कहाँ था और कहाँ आ गया? देखो गर्भ में इतने से छोटे स्थान पर रहना पड़ता है। वहाँ तो हलचल करना भी बहुत मुश्किल है। स्मृति है, सूक्ष्म शरीर साथ में लेकर आया है इसलिये शिशु वहाँ प्रार्थना करता है।

एक बात हम बताते हैं कि सनातन धर्म और पाश्चातय धर्म में अंतर है। सनातन वैदिक धर्म हो या जैन, बौद्ध आदि हो इन सभी में पुर्नजन्म को मानते है। यहूदी, ईसाई और मुस्लिम पुर्नजन्म को नहीं मानते। पाश्चात्य वैज्ञानिक अभी द्वन्द में पड़ गये। अभी तक वे एक ही जन्म मानते हैं। यही मानते हैं कि जब हमारा जन्म होता है तब धीरे-धीरे मन की सृष्टि होती है और उसका विकास होता है। उनका मानना है कि मन की सृष्टि इसी जन्म में और मृत्यु इसी जन्म में। अभी वे परेशानी में क्यों पड़ गये? आजकल वैज्ञानिक युग में गर्भस्थ शिशुओं की तस्वीर खींचते हैं कि उनका कितना विकास हुआ है और यह लड़का है या लड़की? वैज्ञानिक परेशानी में इसलिये पड़ गये हैं कि जब गर्भस्थ शिशु की तस्वीर खींचते है तो वो आंख बंद होते हुए भी कभी हंसता है, कभी रोता है। तो अब वे सोचने लग गये हैं कि हंसना और रोना मन का काम है। बच्चे का तो अभी मन नहीं है तो हंसना-रोना कैसे हो रहा है?

देखिये वो ही पुराना मन, पुरानी बुद्धि गर्भ में है। प्रार्थना करता है कि हे भगवान! मुझे गर्भावास दुःख से मुक्ति दो। मैं आपको नमन करूंगा, कभी आपको भूलूंगा नहीं, हमेशा आपका भजन करूंगा। हमारा जन्म हो गया, फिर क्या हुआ? हम भूल गये। चुनाव में प्रत्याशी आते हैं, हाथ जोड़कर वोटों के लिये निवेदन करते हैं और तरह-तरह के वादे करते हैं जनता से लेकिन जीतने के बाद सब भूल जाते हैं ऐसी ही स्थिति हम सबकी हैं। गर्भ में सब भगवान को याद करते हैं और गर्भ से बाहर आते ही सब भूल जाते हैं। ऐसी भ्रांति में सभी है, हम क्या करने के लिये आये थे औरक्या कर रहे हैं, सोच लीजिये। एक छोटे बच्चे का माता-पिता बड़े प्रेम से लालन-पालन करते हैं, पढ़ाते हैं, विवाह करते हैं और वही बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब माता-पिता को नहीं पूछता है। कुरु-कुरु-कुरु, तो क्या करने के लिये संसार में आये हैं उसे सदा याद रखिये।

तो अब पुनः आ जाइये भगवत गीता के उसी प्रसंग पर। पाण्डव और कौरव दोनों कुरुवंशी कौन है, इसकी व्याख्या करते हैं। अध्याय 1 के प्रथम ृश्लोक में धृतराष्ट्र ने कुरु के दो भाग कर दिये- मामका और पाण्डवा। बड़ा भाई होने के कारण अपने पुत्रों को कुरुवंशीय और छोटे भाई के बेटों को पाण्डूवंशीय बना दिये। इसीलिये कहा मामका। माम ृशब्द अहम वाचक है। अहम से मम बना। मामका मतलब मम पुत्रः। कौन है मम पुत्रः, 100 पुत्र आये हैं युद्ध के लिये। 100 पुत्रों में से हम 2 नाम ले लेंगे और कई कौरव पक्ष के बड़े-बड़े वीरों का नाम हम ले लेंगे- दुर्योधन, दुस्शासन, कर्ण, कृप, द्रौण, भीष्म। ये छः नाम ले लेते हैं हम पहले। इन 6 नामों का बड़ा अनुशीलन करेंगे हम। *........शेष अगले अंक में*

सनातन धर्म की जड़ क्या है

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज
संगरिया

सनातन धर्म क्या है? हमारे आपके जीवन में सनातन धर्म की महिमा क्या है, आवश्यकता क्या है, क्या करना चाहिए? सनातन धर्म को धारण करना चाहिये या त्याग करना चाहिये? इन सारी बातों का समाधान इन पंक्तियों में निवेश किया गया है। कंस के दुर्मंत्रियों ने कहा महाराज-

मूलं हि विष्णुर्देवानां यत्र धर्मः सनातनः।
तस्य च ब्रह्म गोविप्रस्तपो यज्ञः सदक्षिणाय:

सभी देवताओं के आधार भगवान विष्णु हैं, वे भगवान विष्णु सनातन धर्म में निवास करते हैं। सनातन धर्म की जड़ है- वेद, गाय, ब्राह्मण, तपस्या और यज्ञ जिसमें दक्षिणा दी जाती है। कहा कि देव प्रकृति जो विराट है उन सभी देवताओं के मूल में भगवान विष्णु ही है। जितने भी देवी-देवता है वे भगवान विष्णु के आश्रय में ही है। जितने भी देवी-देवता हैं उनकी रक्षा का भार भगवान विष्णु का है। जैसे पेड़ की जड़ें काट दी जाय तो पत्ते हरे-भरे नहीं रहेंगे सूख जायेंगे, कटेंगे, जलेंगे और गिरेंगे। ऐसे ही सम्पूर्ण देवी-देवताओं की शक्ति को कोई नष्ट करना चाहे तो भगवान विष्णु का वध करें। कंस के दुष्ट मंत्रियों ने यह राय दी।

मूलं हि विष्णुर्देवानां सभी देवों की जड़ भगवान विष्णु है तो कंस ने प्रश्न किया कि यदि सभी देवों के मूल में भगवान विष्णु है तो विष्णु की जड़ क्या है? आखिर विष्णु भी तो कहीं से पालन पोषण पाता होगा? उनकी तृप्ति के मूल में क्या है? यत्र धर्म सनातनः। जहां सनातन धर्म है वहीं विष्णु प्रतिष्ठित है और जहाँ विष्णु प्रतिष्ठित है वहाँ देव सत्ता सुरक्षित है। देखो चैन कितना बढ़िया है। विष्णु देवों के मूल में है, विष्णु के मूल में सनातन धर्म है और सनातन धर्म के मूल में कौन है? एक-एक के नीचे कुछ तो होगा? इस बिल्डिंग का अभी जो ऊंचाई है यह 15 फुट है। आप जानते हैं इसकी छत तक 45 ईटों की कड़ी होगी। 1 फुट में तीन तीन ईट कम से कम लगते हैं तो 45 ईटों की चुणाई पर छत लगी है तो आप जानिए किसी से किसी का संबंध जुड़ तो है ना। एक दूसरे के नीचे-नीचे वाला निकालते जाएं तो ऊपर वाला धाराशायी होता जायेगा। इसलिए जड़ को खोद देने के बाद वृक्ष को नहीं रखा जा सकता, भवन को नहीं टिकाया जा सकता।

तो आपने समझा श्रवण किया कि विष्णु भगवान सभी देवताओं की ताकत है, जड़ हैं, पोषक है। विष्णु की शक्ति सनातन धर्म है और सनातन धर्म की शक्ति क्या है? भगवान वेद व्यास जी कहते हैं- तस्य च ब्रह्म गोविप्रस्तपो यज्ञः सदक्षिणाय:। महाराज ब्रह्मवादी ऋषिगण, ब्राह्मण, गाय, तपस्या, यज्ञ और दक्षिणा ये सनातन धर्म की जड़ है। महाराज विष्णु के वध के लिए आपको उद्योग करना होगा। क्या उद्योग करना होगा? सनातन धर्म को हिलाना होगा सनातन धर्म को नष्ट करने के बाद अलग-अलग किसी को मारना ना पड़े। बस सनातन धर्म के नष्ट होते ही सारी प्रकृति, देव शक्ति नष्ट हो जायेगी।

यह दुर्बुद्धि थी उस कंस की। रावण की बात कहीं अलग से नहीं है। सज्जन सज्जन की एक वृत्ति होती है, दुर्जन दुर्जन की एक वृत्ति होती है। युग कोई हो विचार एक होते हैं। त्रेता का रावण ने क्या कहता है, बालकाण्ड की घटना है। रामायण हम सब पढ़े हैं। जहाँ यज्ञ होता हो बंद कराओ जहां तप आदि होते हो बंद कराओ, जहां पितरों का श्राद्ध हो रहा है बंद कराओ, जहां सनातन के कोई भी सत् कर्म किए जाते हो तो बंद कराओ। तो उनके सेवकों ने पूछा महाराज इस यज्ञ से श्रद्धा से आपका क्या लेना देना है? यज्ञ को क्यों बंद करवाना चाहते हो? श्राद्ध को क्यों बंद करवाना चाहते हैं। आज तो कोई बंद नहीं

करवाना पड़ता है, अपने बंद कर देते हैं। अब कोई मनायी करने वाला नहीं इसलिए अपने आप बंद कर देते हैं। कौन पचड़े में पड़े, कौन झमेला पाले। स्वतंत्र रहना सबको पसंद है।

इसलिये हम सनातनियों ने यज्ञ को छोड़ ही दिया और श्राद्ध का त्याग ही कर दिया। बड़े आनन्द की बात है कि थोड़ा भी विवेक हमारा जीवित न रहा। माताओं ने 9 मास हमें कोख में रखा है, पिता के लालन पालन को तो गौण भी करो तो माताएं 9 महीने तक बालक अपने गर्भ में धारण करके रखती है, भारत के पुत्रों में 10 दिन तक भी धैर्य रखने का अभी सामर्थ्य नहीं रह गया। 3 दिन में श्राद्ध समेटकर के अपने-अपने धंधे में लग जाते हैं। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय। क्या हो गया भारत को? कहाँ चला गया विवेक? क्यों आतुर हो रहे हैं हम लोग?

हमें लगता है 50 साल पहले जो संपत्ति भारत की थी उससे सैकड़ों गुणा अधिक अब हो चुकी है तो उतना ही अधिक हमको आराम से जीना चाहिए मगर इसके विपरीत हमारी बेचौनी बढ़ती जा रही है। सम्पदा-वैभव का विस्तार हुआ, आत्मसुख क्षीण हो गया, हम घट चुके हैं। कम से कम 12 दिवस क्या है इसको समझना चाहिए। मां के गर्भ में बालक का जिस दिन आधान होता है, गर्भाधान होता है उस दिन से विकास शुरू होता है। क्रमश एक महीने मूर्धा का निर्माण होता है। शरीर का विकास यहाँ सिर से आरम्भ होता है और 10 महीनों में 10 अंग तैयार होते है। मां के गर्भ में दशगात्र यानि हमारे शरीर के 10 अंग, एक-एक करके अंग तैयार होते हैं। इसीलिए परलोक में गए हुए लोगों के जीवन में 10 दिन का विधान है। किसलिये कि पिण्ड शरीर बनाना है। पिण्ड देने की परम्पराएं थी वो चली गई। कहीं मटकी लटका दिया, कहीं भूल से लोटा पानी डाल दिया, भला।

तो एक-एक पिण्ड प्रतिदिन दिया जाता है। एक पिण्ड क्या है, जानते हैं? उसके 3 भाग होते हैं। आधा तो यमदूत ले लेते हैं, टैक्स। हम तुम्हें लेने आये हैं, आधा हम पायेंगे। शेष आधा का आधा से पोषण और आधा से भोजन जीव का और फिर क्रमशः यात्रा आरम्भ होती है।

तो 10 दिन के पिण्ड से पिण्ड शरीर बनता है जो एक हाथ के प्रमाण का होता है और दशगात्र होने से शरीर पुष्ट हो गया। शरीर पुष्ट हो गया तो भूख-प्यास लगेगी। 11 वें दिन और 12 वें दिन उनके लिये भोजन कराया जाता है। 11 वां कि प्रथा तो भारत के किसी-किसी राज्य में रह गया बाकी सब जगह 12 वां की प्रथा है। 12 किसका? एक रुपया आपने किसी को कर्ज नहीं दिया तो ब्याज के भरोसे कैसे बैठे हो? पहले किसी को 5 रुपया दिया हो तो उससे ब्याज लेने का हक बनता है। तो 12 वा तो ब्याज है। जिसका श्राद्ध हुआ उसका 12 वा होगा न। श्राद्ध तो भारतवालों ने किया नहीं तो 12 वा किसका? जरूरत ही नहीं है 12-13 किसी की, आवश्यकता ही नहीं है। जिसने 11 वें दिन का कर्मकाण्ड किया उसका 12 वा होगा, नहीं तो 12 की समस्या ही नहीं। और आप फ्री हो, मौज मारो।

अब क्या कहते लोग कि अकाल मृत्यु हो गई है, नारायण बलि करो। इसलिये बाध्यतापूर्वक कहते हैं कि सबकी नारायण बलि करो, क्योंकि श्राद्ध की बात सबकी समझ में नहीं आयेगी। तो साधु ब्राह्मण चालाकी पूर्वक कहते हैं कि सभी जीवों की नारायण बलि करो ताकि इस बहाने 11 वे दिन का कर्म तो हो जायेगा। जीव को आहार तो मिला। 11 वें दिन और 12 वें दिन को जीव के भूख-प्यास की तृप्ति होती है। आप जानते हैं कि परम्परा 12 की हो गई। निर्णय शास्त्रों में लिखा है 12 की सीमा नहीं है। 12 लाख भी हो तो कम समझो। उस जीव की इतनी क्षुधा होती है कि जितने भोजन करने वाले होते हैं उन सभी के पटल पर वह जीवात्मा भिन्न-भिन्न-भिन्न-भिन्न रूपों से भोजन प्राप्त करता है इतना महत्व है। पर चूंकी ब्राह्मण की उपलब्धि नहीं होगी तो कम से कम

इस संख्या को पूर्ण करें तो पापी नहीं कहलायेंगे हमें इस समय प्रायश्चित हो गया। केवल प्रायश्चित के रूप में हम 11-12 ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं ना कि प्रचुरता है।

इस विधान से हम शुद्ध हुए। अब लोगों को लगता है कि श्राद्ध में खर्च करने वाले धन को कहीं धर्मशाला बना दी जाए तो क्या अच्छा नहीं होगा? हॉस्पिटल बना दिया जाए तो अच्छा नहीं होगा? कहीं पाठशाला बना दी जाय तो अच्छा नहीं होगा? उन विचारकों से एक बार पूछो कि जिंदगी में तूने इतना ही कमाया है कि बाप के श्राद्ध को रोक करके धर्मशाला बनाओगे? इतना ही कमाए हो? कलेजा चौड़ा करो, कोई और फंड लेकर धर्मशाला वालों को दो, साधु को दो, संतों को दो, जरूरतमंदों को दो, व्यवस्था बनाओ।

माता-पिता के श्राद्ध का फंड क्यों दान करने जा रहे हो? श्राद्ध का पैसा श्राद्ध में ही लगना चाहिये। पूरे मन से श्राद्ध हो, प्रचुरता से श्राद्ध हो। अगर कोई कहता है कि श्राद्ध फिजूल खर्ची है तो प्रश्न उठता है, आत्मा पर हाथ रखकर पूछो कि तुमने फिजूल खर्ची जीवन में कभी और किया है या नहीं किया है? तो उत्तर मिलेगा जो जीवन भर किया वो सब फिजूल ही किया। इसलिये मां-बाप के श्राद्ध वाला सह जाना चाहिये, एक फिजूल और सही। पर शास्त्र कहता है नहीं, यह फिजूल खर्ची नहीं है। आपने जो श्राद्ध किया वो आपके पितृों को प्राप्त होता है। ये श्राद्धआदि पितृों को पूर्ण रूप से मिलता है। 100 वर्षों तक जीवन रहे तब तक शास्त्रों में श्राद्ध करने का विधान किया गया है। गया श्राद्ध देने से, बद्रीनाथ में श्राद्ध देने से श्राद्ध बन्द नहीं किया जाना चाहिए। वो तो आपने त्यौहार मनाया है, उत्सव किया है पर प्रति, प्रति वर्ष उनको भोज देना ही चाहिए, सामर्थ्य हो तो नहीं तो गया के श्राद्ध के बाद असक्त व्यक्ति हाथ जोड़ सकता है।

शरीर हो तो करते रहना चाहिए। यह उनको ऐसे प्राप्त होता है जैसे मानो आपके बच्चे विदेश में पढ़ते हैं सालाना 10 लाख रुपये उसको खर्चा देना है तो 10 लाख रुपए अपने बच्चों के नाम भेजा तो भारतीय मुद्रा, बैंक में जमा कर दिया अब विदेशों में पढ़ने वाला बच्चा वहां भारतीय करेंसी के 100-500 का नोट नहीं पायेगा। क्या पायेगा वहां? डॉलर या अन्य मुद्रा चलता होगा उसके रूप में पायेगा। बैंक में छुड़ाने जायेगा वहाँ लड़ पड़े कि भाई हमारा भारत वाला नहीं करेन्सी यहाँ नहीं मिलेगा क्या? तो उसके बदले में उस देश की उसी के मुताबिक उसको वहाँ प्राप्त होगा।

यह साधारण सी बात समझ में आ गई तो जानो आपने आटे का पिण्ड दिया यह अमृत बनकर प्राप्त होगा, आटे का पिंड दिया तो भोजन बनकर प्राप्त होगा, आटे का पिण्ड दिया वो घास बनकर मिलेगा। जिस जिस योनियों में हमारे पूर्वज होंगे, उनको वहीं उस रूप में हमारे श्राद्ध से पोषण प्राप्त होता रहेगा।

अभी एक घटना सुनी है। कुछ प्रेमी लोग आपस में विचार किया कि हम भोजन करने चलें। चले तो एक व्यक्ति ने बताया कि हमारी तो अभी-अभी तृप्ति हो गई। साथ वालों ने कहा कि ऐसे कैसे तृप्ति हो गई भोजन तो अभी किया ही नहीं। तो उसने बतायाकि हमारे पूर्व जन्म का जो बालक था, पूर्व जन्म का बेटा है उसने श्राद्ध किया पुत्र ने हमें भोजन दिया है। तो साथ वालों ने कहा ऐसे तो हम कैसे माने? कहाँ है वो आपका बेटा? गांव जानते हो, लेकर चलो हमें वहाँ। हां हम गांव जानते हैं, शहर जानते हैं, व्यक्ति जानते हैं। आयु उनकी कुछ अधिक नहीं थी। सबको जिज्ञासा हुई कि इसको जानना चाहिए। तो उसने कहा चलो। सबको लेकर गया उस गांव में और पता लगाया कि अमुक नाम के व्यक्ति कहां है, तो बताया कि वो कहां गुजर गए थे। तो पूछा कि आज रात को उनका श्राद्ध था क्या? आज उनके श्राद्ध का भोजन दिया है क्या यहाँ? गांव

वालों कहा हाँ आज उनका श्राद्ध था। उसे उस घर पर लेकर गये। वहां जाकर उसने कहा कि यह हमारी पत्नी है, यह हमारे दो बेटे हैं। छोटा बच्चा कह रहा है कैसे माने तो उनके हाथ की एक वस्तु रखी थी जो आज तक नहीं मिली थी तो घरवालों ने कहा कि अमुक वस्तु आपने कहां रखी थी बताओ तो माने कि आप हमारे वो ही हो।। तो वे अलमारी के पीछे से कोई वस्तु उठा कर लाये। परिवालों ने कहाआप तो पीछे सेलाये हो, मगर उस समय तो आपने कहाथा कि इसे मैं अलमारी में रख रहा हूँ। तो उन्होंने कहा कि वो हमने छुपाकर पीछे रखी थी पर आपको बता नहीं पाये उससे पहले ही हमारी मृत्यु हो गई।

श्राद्ध से तृप्ति हुई ऐसी प्रत्यक्ष घटना हमको संतों ने बताया है। परलोकवाद के सिद्धान्त को हम मानते आये हैं। यह ऐसी अद्‌भुत घटना है। ध्यान दिया जाय, इन बातों को समझने की आवश्यकता है। मानस की कथा कहने जा रहे थे, कितने ब्राह्मणों को भोजन कराया जाए, अपने परिजनों को भोजन कराया जाए वह आपको ज्यादा विचार नहीं करना चाहिए। इसको समझना इसलिए होगा कि जितने जीव है मनुष्य के अलाव उनके शरीर का मांस होता है और मानव के शरीर में मांस नहीं होता है, यह महामांस होता है।

तो जब मृत्यु के बाद मानव मानव का अग्नि संस्कार करने के लिये जलाते है तो महामांस जलाने का उसे घोर पाप लगता है। जिनके गोद में खेले, जिनका दूध पिया उनको सनातन धर्म के संस्कार के लिये हमें जलाना पड़ता है। माता-पिता को अग्नि संस्कार के लिये महामांस जलाने का घोर पाप लगता है। सनातन धर्म का विधान है, करना पड़ रहा है पर महापातक लगता है महामांस जलाने से। ऐसी स्थिति में पाप से हम छूटे कैसे? पाप किलो भर होगा हजारों हजारों हजारों लोग जब भोजन करेंगे तो यह पाप वे बांट लेंगे और 11 वा 12 वा करने वाले के पाप वे बांट देंगे तो अकेले पर वजन नहीं पड़ेगा। पहले समाज का न्याय था कि अकेले व्यक्ति अगर उसे ढ़ोये तो पाप से दब जायेगा,पाप पतन की ओर ले जाता है। हम समाज मिलजुलकर अगर उसे बांट लेंगे और थोड़ा-थोड़ा पाप सबके माथे चढ़ भी गया तो तो अपने दैनिक नित कर्मो के माध्यम से उस पाप से छूट जायेंगे। अगर समाज ने बहिष्कार कर दिया कि तुम्हारा नहीं खाएंगे, आप ऐसा करके देखना उसका पतन कल से आरंभ हो जाएगा उसके विकास रुक जाएंगे।

महामांस जलाकर अगर साधु संतों को ब्राह्मणों और परिजनों को भोजन नहीं कराया तो घोर पाप के कारण पतन होना और अवश्यसंभावी है। जितनी संख्या में विस्तार हो सके समर्थ हो तो भोजन कराना चाहिये।

रावण ने श्राद्ध बंद किया सनातन धर्म की जड़ है। रावण का विचार है जब श्राद्ध, यज्ञ, पूजा पाठ, कथा पुराण सब बंद होंगे, क्षुधा व्याकुल देवता देवताओं की ताकत क्षीण हो जाएगी, वे बलहीन हो जाएंगे। इसको कैसे समझें। भगवान आपको सब कुछ देते हैं तभी तो श्रद्धा है मंदिर में जाकर सिंचन करते हैं, भगवान की पूजा करते हैं, अभिषेक करते हैं, पर अपने लिये वे कुछ नहीं करते हैं। उनके लिये सेवा, पूजा, भोग हम करेंगे। रावण का विचार था कि भूख प्यास से कमजोर होकर विष्णु बलि के (हमारे) पास आएंगे। छोड़ देंगे, मार देंगे या बंदी बना लेंगे।

तो प्रेमी भक्तों यह सनातन धर्म की बात हम करने जा रहे हैं। वेद, गाय, ब्राह्मण, ऋषिगण, तपस्या, श्राद्ध और यज्ञ जिसमें दक्षिणा दी जाती है ये सब सनातन धर्म के मूल हैं। राजन इन सभी को हम नष्ट कर डालें तो सनातन धर्म नष्ट हो जायेगा और सनातन धर्म के नष्ट होने से भगवान विष्णु नष्ट हों जायेंगे और उनकी देव सत्ता नष्ट हो जाएगी। अभी आपको मनुष्य के दशगाथ की कथा सुनाई थी ऐसे ही भगवान विष्णु के भी 10 अंग है। भगवान विष्णु दशांग है। नाम देखिए - ब्राह्मण, गाय, वेद,

तप, सत्य, दम, शम, श्रद्धा, दया और तीतीक्षा।

वेद भगवान के अंग है, ब्राह्मण भगवान के अंग है, गायें भगवान के अंग है, सत्य भगवान के अंग है, तपस्या भगवान के अंग है, श्रद्धा भगवान के अंग है इंद्री दमन भगवान के अंग है, अंत:करण का संयम भगवान का अंग है, यज्ञ भगवान का अंग है, दया भगवान का अंग है, सहिष्णुता भगवान का अंग है। ये दसों मिलकर के भगवान विष्णु पूर्ण होते हैं। जैसे एक नाखून काटने पर भी लगता हमें कुछ कमी आई किसी अंग के घात से हम विकलांग होते हैं। विकलांग का तात्पर्य क्या हुआ? विकलता माने पीड़ा से परिपूर्ण। विकलांगता का मतलब है किसी अंग का पीड़ित होना। इन दसों अंगों में भी गोमाता सबसे अधिक पीड़ित है।

श्राद्ध के लिये शुद्ध और सात्विक पदार्थ चाहिये। शुद्ध और सात्विक पदार्थ इस धरती पर हमें केवल गोमाता ही दे सकती है। यज्ञ भी केवल गोमाता के घृत से ही किये जाने का विधान है। अन्य पशुओं की चर्बी से बने बाजारू अशुद्ध घी से किया गया यज्ञ देवता ग्रहण नहीं करते उसे असुर ग्रहण कर पुष्ट होते हैं और ऐसे यज्ञ से हमें लाभ की बजाय हानि ही होती है। यज्ञ के आचार्यो को भी चाहिये कि वे गोघृत के अलावा किन्हीं अशुद्ध पदार्थो से आहूति नहीं दे, नहीं तो वे दोष के भागी बनेंगे। बिना गोसेवा के भगवान विष्णु कभी प्रसन्न नहीं होते हैं।

भगवान को ये 10 में से 10 चाहिये। ब्राह्मण सुरक्षित चाहिए, गाय सेवित चाहिये, वेदविद्या का विकास होते दिखना चाहिये, तपस्वी संसार में हो, सत्य पालन करने वाले हो, इंद्रियों को दमन करने वाले हो, अंत:करण पर संयम रखने वाले हो, श्रद्धावान भी चाहिए, दया करने वाले भी चाहिए, यज्ञ करने और कराने वाले भी चाहिये। ऐसे 10 अंक पूर्ण होने से भगवान का सनातन धर्म परिपूर्ण होता है और इससे देव सृष्टि का परिपोषण होगा। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय।

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूजपेपर्स सेंट्रल नियम 1935 के 8 वे नियम के अंतर्गत कामधेनु कल्याण नाम के समाचार पत्र के स्वामित्व तथा अन्य विषयों के संबंध में प्रकाशित किये जाने वाले विवरण:

फार्म ४

प्रकाशन का स्थान:- श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा, सांचोर जिला जालोर राज. 343041

प्रकाशन की अवधि:- मासिक

प्रकाशक का नाम:- अम्बा लाल सुथार

प्रकाशक का पता:- कारोला, सांचोर, जालोर राज. 343041

क्या भारत के नागरिक है?:- हाँ

मुद्रक का नाम:- पुरखाराम पुरोहित

मुद्रक का पता :- चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस हाडेचा रोड़ सांचोर

क्या भारत के नागरिक है?:- हाँ

संपादक का नाम:- अम्बा लाल सुथार

संपादक का पता:- कारोला, सांचोर, जालोर राज. 343041

क्या भारत के नागरिक है?:- हाँ

उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों।	श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा, सांचोर, जालोर राज. 343041

मैं अम्बा लाल सुथार एतद्द्वारा यह घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

अम्बा लाल सुथार
प्रकाशक के हस्ताक्षर

पृष्ठ 32 का शेष......... अतिथि उपस्थित रहे ।

न्यास कार्यकारिणियों की संयुक्त बैठक आयोजित

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के न्यासी बोर्ड, केन्द्रीय कार्यकारिणी एवं श्री सुरभि प्रज्ञा परिषद की संयुक्त बैठक दिनांक 25 मार्च को श्री कामधेनु गो अभ्यारण्य सालरिया म.प्र. के पावन परिसर में पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज के सभापतित्व एवं पूज्य ग्वाल संत स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज, पूज्य महंत श्री गोविन्दवल्लभदास जी महाराज श्रीपतिधाम सिरोही के पावन सानिध्य में आयेजित की गई।

युवाओं के साथ मन की बात

पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज

एक बार सभी शांत होकर, सीधे बैठ जाएं। किसी महापुरुष ने बताया है कि अगर कोई युवा अपनी ऊर्जा को बढ़ाना चाहता है और उसको अन्य कोई तरीका समझ में ही नहीं आ रहा है तो वह केवल इतना ही तय करले कि मैं जब भी बैठूंगा,सीध ा बैठूंगा तो उसकी ऊर्जा बढ़ने लग जाती है। रीढ़ की हड्डी सीधी रहने से हमारे जितने भी षटचक्र है वे सक्रिय रहते हैं।

वैसे तो कथा में बहुत बातें आती है और वहीं उनका समाधान भी हो जाता है लेकिन फिर भी युवाओं के मन में बहुत सारे प्रश्न होते हैं और वह चाहता है कि उसे इसका सटीक समाधान मिले। जिनका उन्हें कहीं तो समाधान मिलता है और कहीं नहीं मिलता है। शांत रहने को कह दिया जाता है, कहीं कहते हैं कि ज्यादा दिमाग मत लगा चुप रह। पर युवक के भीतर एक आंदोलन चलता रहता है क्योंकि वह जीवन की सीढ़ी पर चढ़ रहा होता है। हर सीढ़ी में कितना दम है वह जानना चाहता है। जो सीढ़ियों चढ़ चुका है उसे मालूम है कौनसी सीढ़ी में कितनी ताकत है, लेकिन जो चढ़ रहा है वो जानकर फिर चढ़ना चाहता है। लह युवावस्था है जिसमें हर कदम को धरातल देखकर रखा जाता है।

बुरा न मानें आज के समय में अनेक युवा हवा में उड़ना चाहते हैं लेकिन मेरी प्रार्थना है कि पहले जमीन नाप लो फिर हवा में उड़ो ताकि गिरो तो भी सही जगह गिरोगे। बिना जमीन नापे अगर उड़ेंगे तो ऐसी जगह गिरेंगे जहाँ हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं होगा। और अगर जमीन नाप कर गिरेंगे तो उठने का साहस होगा। इसलिये पहले कदम बढ़ाइये, पहले चलिये। सबसे पहले महत्व की बात है भाई चलना। युवाओं को अधिक से अधिक चलना चाहिये। यह बात हम विदेश में रहने वाले लोगों से सीख सकते हैं। अच्छी बात कहीं से सीखने को मिले तो कोई हानि नहीं है। अमेरिका में, लंदन में, यूके में मैं गया हूं। वहां मैंने देखा है कि लोग अधिक से अधिक पैदल चलते हैं। गाड़ियों का बहुत कम प्रयोग करते हैं। गाड़ियों, टू व्हीलर का भी बहुत कम प्रयोग करते हैं। ऑफिस तक लोग पैदल जाते हैं यानी 5 किलोमीटर तक की यात्रा भी उनको पैदल करने में संकोच नहीं होता है। अपने को अपनी गली से अगली गली में जाने में भी टू व्हीलर लगता है। हमारी सबसे बड़ी कमी है कि हम चलना नहीं चाहते हैं। लेकिन यह पैदल चलना अपने आप आपके अंदर क्या-क्या चीजें विकसित कर देगा, आपके अंदर क्या-क्या चीजें ले आएगा आप सोच भी नहीं सकते। आप करके देखिए। युवाओं को अधिक से अधिक चलना चाहिए। आज की सभा का यह सबसे पहला सूत्र आप पकड़ लीजिए कि हमको ज्यादा से ज्यादा चलना चाहिए। आप जब जमीन पर चलेंगे तो आपको जमीन पर चलने की हकीकत समझ में आएगी कि जमीन होती क्या है, जमीन के लोग कैसे होते हैं? हम ख्याल भी आसमान के देखते हैं, लोग भी हमारे ख्यालों में आसमान के होते हैं। हम जीवन की वास्तविकता से तो परिचित हो ही नहीं पाते हैं।

अब लोगों की जिंदगी जो है वह एक मोबाइल रूपी यंत्र में सिमट गई है भाई। जो मोबाइल हमको दिखा रहा है हमें लगता है कि यही जिंदगी है। लोग कहते हैं कि मोबाइल के होने से लोगों का नजरिया बढ़ा है, दायरा बढ़ा है। लेनदेन का दायरा बढ़ा है, संपर्क का दायरा बढ़ा है लेकिन समझ का दायरा नहीं बढ़ा है। हर व्यक्ति मोबाइल का प्रयोग समझ बढ़ाने के लिए नहीं करता है। बहुत सारे लोग मोबाइल का सबसे अच्छा उपयोग समझते हैं मनोरंजन। मोबाइल बोर नहीं होने देता है, मोबाइल मन लगाए रखता है, सबसे अच्छा प्रयोग लोगों को जो लगता है कि

मनोरंजन बहुत अच्छा होता है और आप देखो मनोरंजन भी कैसे-कैसे? पहले सबके साथ बैठकर हंसना बहुत अच्छा लगता था। कोई हंसी की बात होती थी तो पेट में जैसे गैस गुड गुड होती रहती थी कि कब चार दोस्त मिले और उनके आगे उगलें। अब तो मोबाइल के प्रेमी को एकान्त चाहिये, जैसे भगवान के प्रेमियों को एकांत चाहिए। ध्यान से सुनिए भैया एकांत में कोई ग्रंथ अगर आपके पास है भले ही आपने ग्रंथ को खोलकर भी नहीं देखा होगा तो भी वह ग्रंथ आपका हित कर देगा। एकांत में अगर कोई पुष्प या फूल आपके पास है उस फूल को बार-बार ना भी सूघेंगे तो भी वह फूल आपको बहुत अच्छी सकारात्मक ऊर्जा देगा लेकिन यदि एकांत में मोबाइल आपके पास है तो वह आपसे क्या-क्या करा देगा भाई मैं कह नहीं सकता। माफ करिएगा समय को देखते हुए कहना पड़ रहा है। जो यंत्र बना था सुविधा के लिये, सम्पर्क के लिये वो यंत्र आज क्या बन गया है, भगवान बचावे।

कुछ समय पहले मोबाइल का आविष्कार करने वाले का इंटरव्यू आया था बेचारे रो रहे थे कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरी बनाई हुई चीज से ये हाल हो जायेंगे। संबंधों का सुख खत्म हो गया मित्रता का सुख चला गया। एकदम सच्ची बात बता रहा हूं। चार मित्र बैठे हैं बहुत अच्छे से बातें हो रही है महाराज जी, लेकिन अगर मेरे मोबाइल में कोई मुझे ऐसा नोटिफिकेशन आता है कि कोई वीडियो आया है, कोई वैसा आया है इस समय मेरे लिए वे मित्र बेरूखे हो जाते हैं, वह नीरस हो जाते हैं, मेरे लिए वे दुश्मन हो जाते हैं, मन करता है सब जाय कैसे? मकोड़ा शरीर के चिपक जाए तो मन करता है उसको कितना जल्दी फेंके। ऐसे वे मित्र हो जाते हैं। मतलब बहुत गहरे मित्र हैं, लेकिन पता नहीं उसे मोबाइल में आए हुए उस नोटिफिकेशन में आपको ऐसा कर दिया कि इतने गहरे मित्र भी अच्छे नहीं लग रहे हैं। ध्यान से सुनो मित्रों! मैं हाथ जोड़कर कहता हूं आपको- जब आपकी मां इतनी बीमार थी तब यह मित्र आपके साथ रात दिन खड़ा था। इस मित्र की सहायता नहीं मिलती तो आप अपने माताजी की अच्छे से चिकित्सा नहीं करवा सकते थे। पिताजी का एक्सीडेंट हो गया था पुणे में, यही मित्र दौड़ कर गया था तुम तो यहाँ थे ही नहीं, तुम तो राजस्थान में थे। भैया को व्यापार में घाटा लग गया था, भैया कहीं गायब हो गए थे। मांगने वालों की भीड़ लग गई थी घर पर उस समय यह दोस्त था जिसमें तुम्हारी मदद करी, लेकिन एक मोबाइल पर एक नोटिफिकेशन आया तो इतने गहरे मित्र तुम्हारे लिए प्राण देने वाले मित्र बेरूखे हो गए और तुम मन में ऐसे सोचने लगे कि पीछा कैसे छुड़ाएं और झूठ बोल देते हैं कि अच्छा मेरे भाई मैं चलता हूँ मुझे कुछ जरूरी काम है, बाद में मिलते हैं। तुम्हारे झूठ को वे सब समझते हैं लेकिन सोचो यह कितनी गई बीती बात है।

ऐसी बीमारी नहीं होनी चाहिए भाइयों! मोबाइल अपनी जगह है, पर मित्रता सबसे बड़ी चीज है। हमारे लिए सबसे बड़ा सुख यह होना चाहिए कि हम अपने मित्रों के साथ हैं, उनके साथ ह्दय की बात कर रहे हैं तो सबसे बड़ा मनोरंजन यही होना चाहिए। इसलिए सबसे पहला नियम तो यही ले लीजिए कि हम एकांत में अपने मोबाइल का जब भी उपयोग करेंगे तो सिर्फ और सिर्फ अपने सूचना के आदान-प्रदान के लिए करेंगे, संपर्क के लिए करेंगे। आज सब यह मन में संकल्प कर लो मेरे युवा भाई-बहनों! अन्य कोई मनोरंजन का व्यवहार, अन्य कुछ देखने का, सुनने का व्यवहार अकेले में मोबाइल से नहीं करेंगे। यह बात आपको अपने हिसाब से समझनी पड़ेगी मैं इतना ही कह सकता हूं क्योंकि अभी मेरे शब्दों को इतना ही कहने की मर्यादा है। मेरे साथी तो चाहते हैं कि मैं खुलकर बोलूं, सहज बोलूं, आवश्यक है सबको समझाना, सबको बताना, यह महत्व की बात है लेकिन शायद में अभी इस विषय में इतना नहीं

खुला हूं। इसलिए मैं इतना ही संकेत करता हूं आपका एकांत सुरक्षित होना चाहिए, आपका एकांत सुरक्षित होना चाहिए। जिसका एकांत सुरक्षित है उसका जीवन सुरक्षित है। लोगों के बीच में हम कैसे हैं यह हमारा असली चरित्र नहीं है, अकेले में हम कैसे हैं यह हमारा असली चरित्र है। हम सबके सामने साधु हैं, माफ करना भाइयों थोड़ी सी बात कड़वी बोलता हूं, हम सबके सामने संत हैं, सबके सामने हम सज्जन हैं, सबके सामने हम बहुत ही अच्छे आदमी हैं लेकिन एकांत में हम इस मोबाइल में न देखने योग्य दृश्य देख रहे हैं, न सुनने योग्य वार्ता सुन रहे हैं, हमारा एकांत पवित्र नहीं है तो हमसे बड़ा चरित्रहीन और कोई नहीं। क्योंकि ध्यान दीजिए सबके सामने गिरें तो दुनिया की नजरों में गिरना है। दुनिया की नजरों में गिरा हुआ आदमी वापिस उठ सकता है, पर अकेले में गिरे तो भगवान की नजरों में गिरे और भगवान की नजरों में गिरने के बाद उठाना मुश्किल होगा। मेरे भाई-बहनों! एकांत में मत गिरना बहुत बड़ा धोखा होगा। तो सबसे पहला सूत्र आज की अपनी वार्ता का है कि चलते रहना, युवओं को चलते रहना है और दूसरा सूत्र हुआ हमारा एकांत सुरक्षित होना चाहिये।

भाइयों और बहनों! अधिक से अधिक चलने का अभ्यास करिए। चलते-चलते कितनी बातें आपके जीवन में आ जाएंगी, विश्वास करिए यकीन करिए चलते-चलते आप क्या-क्या नहीं सीख जाएंगे। आप याद करिए जब इतने टू व्हीलर नहीं होते थे, फोर व्हीलर नहीं होते थे, आपके दादा परदादा पैदल-पैदल दुकान जाते थे, किसी कार्यक्रम में पैदल-पैदल जाते थे और उन्होंने जमीन नापते-नापते जिंदगी नापी। आज उनके अनुभव, उनकी प्रापर्टी से हम आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने किस जमाने में एक लोटे और एक गमछे से जिन्दगी शुरू की मेरे भाइयों! आज का युवा अपने पिता को कहता है मुझे 10 लाख रुपए दीजिए, मुझे 50 लाख रुपए दीजिए, मैं उसके बिना कैसे कुछ कर सकता हूं। मुझे काम करना है इतना रुपया चाहिए। यह दीजिए, वह दीजिए, उसके बिना मैं कैसे कर सकता हूं और आप इसकी जगह याद करिए अपने दादा परदादा को जो एक लोटे में उन्होंने जिंदगी शुरू की, व्यवहार शुरू किया, व्यापार शुरू किया, पर जिन्होंने 1-1 रु. 2-2 रु. के वेतन पर काम करना शुरू किया उन लोगों के बारे में हम कभी सोचते ही नहीं। हर युवक को अपने दादा के बारे में सब पता होना चाहिए, अपने पिता के बारे में सब पता होना चाहिए। हमको जितना लाभ अपने परिवार के इतिहास को जानने से होगा उतना भैया और लोगों के बारे में जानने से नहीं होगा।

जिन लोगों के बारे में हमको जानना चाहिये, उनके बारे में तो जानते नहीं और हम पूरे संसार के बड़े-बड़े लोगों के बारे में जानकारियों करते हैं। मैं नहीं कहता कि आप रामजी को जानो, शिवजी को जानो, कृष्णजी को जानो, पर अपने दादा को तो जानो। अपने पिताजी को तो जानो। अगर आपको क्रिकेटरों के बारे में बोलने का कहेंगे तो आप कितना बोल दोगे, हीरो हीरोइनों के बारे में कहेंगे तो बहुत कुछ बता दोगे, लेकिन अपने पिताजी के बारे में आपको कितनी जानकारी है? अगर बोलना कहेंगे तो कितनी देर बोल दोगे अपने पिता के बारे में। कई जने तो अपने पिता के नाम के साथ श्री और जी लगाना भी नहीं जानते।

मैं एक बात कहता हूं मेरे भाई-बहनों हर बच्चे के माता-पिता का जो जीवन है वह एक बहुत बड़ी किताब होती है बच्चों के लिए। अगर कोई ईमानदारी से अपने माता-पिता के जिंदगी की किताब पढ़ ले तो पूरी ईमानदारी और पूरे विश्वास के साथ कहता हूं कि उसकी जिंदगी में किसी मोटिवेशनल स्पीकर को सुनने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिसने अपने माता-पिता की जिंदगी को पढ़ लिया उसने जीवन के बारे में बहुत कुछ सीख लिया। मैं आप लोगों से जब यह बोल रहा हूं ना तो इस ....शेष पृष्ठ 9 पर ...

गोकृपा कथा

पू. ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज

सबसे बड़ी कथा कौनसी है

याद रखिये! जिसको गोमाता से प्रेम नहीं वो किसी से प्रेम नहीं कर सकता, प्राणीमात्र से प्रेम नहीं कर सकता और जो प्राणीमात्र से प्रेम नहीं कर सकता वह परमात्मा से कभी प्रेम कर ही नहीं सकता। चींटी से लेकर हाथी तक, व्हेल से लेकर डॉल्फिन तक सबसे प्रेम की बात है, सबसे प्रेम की बात है तभी प्रभु से प्रेम हो पाएगा। पहले प्रभु की सामग्री से प्रेम करेंगे फिर प्रभु से प्रेम होगा। जिसको प्रभु की सामग्री से प्रेम नहीं वह प्रभु से कैसे प्रेम कर सकता है? यह सब प्रभु की सामग्री है। संसार में नेत्रों से जो कुछ दिख रहा है वह सब प्रभु की सामग्री है। जब उसकी सुरक्षा, उसके सौंदर्य का ख्याल रखने का विचार मन में आएगा तब प्रभु आयेंगे यह हमें माँ शबरी सिखाती है। पर यह सब आया कहां से? *प्रथम भक्ति संतन कर संगा। दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।* संतों के संग से आया, भले विचारों के लोगों के संग से आया।

आप कहोगे कि बचपन में माँ शबरी को संत कहाँ मिले? वो तो बचपन से ही भक्त थी तभी तो घर छोड़कर ऋषियों के पास गई। मां शबरी के घर में असंख्य गोमाताएं थी उनका संग ही तो सबसे बड़ा सत्संग था। क्रम वहीं से शुरू हुआ। गो के संग से बड़ा कोई सत्संग संसार में नहीं है। हम लोग भ्रम में जीते हैं। कई बार यह गा लेते हैं, नाच लेते हैं, कीर्तन कर लेते हैं, कथा कर लेते है यह सत्संग प्रेरणा के लिए ठीक है, इसका विरोध नहीं करते हैं हम लेकिन असली सत्संग तो सत् पदार्थ का, सत् तत्व का, सत् जीव का संग कर रहे हैं वो है। और गैया मैया से बड़ा कौन है, कहां है, गाय के संग से बढ़कर कोई सत्संग नहीं। दूसरी बात रति मम कथा प्रसंगा। बचपन में शबरी को माता-पिता से गैया जी की तो कथा मिली होगी- गाय हमारी माता है। जंगल में रहने वाली शबरी को कौन भागवत कथा सुनाने पहुँचा होगा और कौन राम कथा सुनाने गया होगा। वहाँ तो गैया की महिमा ही सुनने को मिली और हर हिंदुस्तानी अधिक कुछ नहीं जानता था लेकिन इतना तो सबको पता था कि गाय हमारी माता है। यह सबसे बड़ी कथा है। यह चार- पांच अक्षरों की जो कथा है ना यह सबसे बड़ी कथा है। जिस व्यक्ति को यह समझ में आ गया कि गाय हमारी माता है बस फिर भगवान अपने आप हमारी तरफ दौड़े चले आते हैं। केवल कहे नहीं यह समझ जाए कि गाय हमारी माता है। कहती तो सारी दुनिया है लेकिन किस-किस को समझ में आया कि गाय हमारी माता है, यही असली मुद्दे की बात है।

देश, धर्म और संस्कृति को बचाना है तो यह कार्य करना होगा।

मेरे भाइयों-बहनों भारतीय संस्कृति एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ उसे बाहरी संस्कृतियों के साथ-साथ अपने ही लोगों से संघर्ष करना पड़ रहा है और इसका प्रधान कारण है- जिससे संस्कृति का पोषण होता है, जिससे संस्कृति को शक्ति प्राप्त होती है वह शक्ति है गोमाता। गोमाता की सतत् सेवा, गोमाता की निष्काम सेवा, गोमाता के शुद्ध पदार्थो का उपयोग, गोमय का उपयोग- आहार, औषधि और कृषि में, दुग्ध का उपयोग आहार, अनुष्ठान और औषधि में, घृत का उपयोग आहार औषधि और उपासना में गोमूत्र का उपयोग आहार औषधि और पवित्रीकरण में है। यह सब करने के बाद स्वत:

ही मेरे भाई और बहनों एक सद्विचार की धारा बहेगी जो भारतीय संस्कृति को पुनः अपने मूल स्वरूप तक पहुँचा सकती है, वास्तविक स्वरूप तक पहुँचा सकती है। हम लोगों को देश बचाना है, हम लोगों को धर्म बचाना है, हम लोगों को संस्कृति बचानी है, हम लोगों को प्रकृति को बचाना है, हम लोगों को पहाड़ बचाने हैं, हम लोगों को नदियें बचानी है, हम लोगों को मंदिर बचाने हैं तो फिर गोमाता को सबसे पहले बचानी पड़ेगी, क्योंकि इन सबकी रक्षा गोमाता से ही प्रारंभ होती है। गोमाता की रक्षा बिना यह कल्पना करना कि इन सबकी रक्षा हो जाएगी यह तो मात्र हास-परिहास जैसी बात है मेरे भई बहनों। बिना गोमाता के न हम अखंड भारत का विचार कर सकते हैं न सुखद राष्ट्र सेवा की कल्पना।

मेरे कुछ साथियों का बहुत अच्छा सपना है कि भारत हिंदू राष्ट्र बने, बनना भी चाहिए, उनका बहुत अच्छा सपना है लेकिन यह सपना उसी दिन पूरा होगा मेरे भाइयों जिस दिन भारत की सड़कों पर एक भी गोवंश निराश्रित नजर नहीं आएगा। अगर सड़क पर कोई गोवंश दिखेगा तो भी किसी गोपाल के हाथ में उसकी रस्सी होगी। उसकी रस्सी होगी किसी विद्वान के हाथ में, उसकी रस्सी होगी किसी सेठ के हाथ में, उसकी रस्सी होगी किसी गोप्रेमी संत के हाथ में, उसकी रस्सी होगी किसी किसान के हाथ में जो गोमाता को प्रेम से भ्रमण करवाने कहीं ले जा रहा होगा। तब हम भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का विचार कर सकते हैं। जिस दिन भारत की समस्त गोमाताओं को आहार, औषधि, आश्रय, उपचार पूरी तरह प्राप्त होगा और विशेष रूप से उनका आदर मिलेगा तभी हम भारत को हिन्दू राष्ट्र बना सकते हैं इससे पहले बहुत मुश्किल है, आपके पास कोई युक्ति हो बताइये। सरकारी कागजों में लिख भी दिया जाय तो उससे क्या होगा? कागजों में तो बहुत कुछ लिखा है, बात केवल कागज पर लिखने की नहीं महाराज इसे तो काजल की तरह आंखों पर लिख लेना चाहिए कि यह कार्य जब तक पूर्ण नहीं होगा तब तक हम विश्राम नहीं करेंगे। देश के हर एक कोने में गोभक्त खड़े हो। 5 लाख गांव है तो 5 लाख गोशालाएं और 5 लाख गोचिकित्सालय होने चाहिए निराश्रित गोमाता के लिए। भारत में यह असंभव नहीं है। एक गांव जब मनपूर्वक करेगा तो बाकी के गांव भी भावपूर्वक इस कार्य को निश्चित रूप से करेंगे। इसलिए भाइयों और बहनों हम लोगों को यह आह्वान करना चाहिए कि भारत का ऐसा कोई गांव ना हो, ऐसा कोई दर ना हो, ऐसा कोई द्वार न हो, ऐसा कोई घर ना हो जहां गोमाता ना हो और वह भी सुखपूर्वक निवास न करती हो। पड़ोसी के घर में घास खत्म हो जाए तो लोगों में इतना भाव होना चाहिए कि अपने घर से घास ले जाकर के पड़ोसी की गाय को खिलाएं। किसी के घर में और किसी गोशाला, गो चिकित्सालय में विराजने वाली कोई भी गोमाता भूखी-प्यासी ना रहे। यह आह्वान हम भाव से और पूरे देश से करते हैं।

कौन-कौन हैं गो हत्यारे

केवल मात्र गोहत्या का कलंक मिट जाने से बात नहीं बनेगी। गोहत्या का कलंक मिटाने के साथ-साथ गोमाता को आदर युक्त स्थान भी तो मिलना चाहिए। अगर सबने मिलकर के गोहत्या बंद करवा भी दी लेकिन गैया यदि सड़क पर घूम रही है, दर-दर की ठोकरें खा रही है, प्लास्टिक खा रही है, एक्सीडेंट हो रहा है, शीत व बरसात से प्राण त्याग रही है तो भैया यह भी तो गोहत्या ही है। कसाई गला काटे उसको तो आप गोहत्या कहते हो और अपनी लापरवाही से सर्दी के कारण, बारिश के कारण, हम सेवा नहीं करें भूख-प्यास के कारण,

दुर्घटना के कारण, बीमारी के कारण, हमारी उदासीनता के कारण गोमाता प्राण त्यागती है तो हम सब भारतवासी गो हत्यारे हैं। क्योंकि हम कारण बन रहे हैं। बाकी को छोड़ भी दो तो एक अरब से अधिक हिन्दू हैं, हम अभी खुद ही नहीं लगे तो कैसे विचार करें कि मुसलमानों को कहेंगे, ईसाइयों को कहेंगे कि आप गोसेवा करो। वो करे तो बहुत उत्तम बात है, मनाही नहीं करते, उनका स्वागत है। लेकिन पहले हम तो करें।

सवा अरब हिन्दुओं के होते हुए अगर कोई गोमाता ठण्ड से सड़क पर प्राण त्यागती है, कोई गोमाता भूख-प्यास से प्राण त्यागती है, अरे त्याग रही है, प्रति वर्ष त्याग रही है तो फिर हम भी तो गो हत्यारे हुए। क्योंकि हमने अपने कर्तव्य को निभाया नहीं है। केवल छुरी चलाना ही हत्या करना नहीं है, व्यवस्था नहीं करना भी तो हत्या ही है। आप आपके माता-पिता को गोली मत मारो, लेकिन कमरे में बंद करके भूख-प्यास से मरने दो तो क्या आप पर हत्या का केस नहीं लगेगा? लगेगा। तो बस ठीक वही तो बात है कि कसाई गला काटकर गोहत्या कर रहा है और हम लोग अपने घर में गोमाता नहीं रख करके दर-दर भटककर प्राण त्यागने के लिये मजबूर कर रहे हैं तो क्या हम भी हत्या के दोषी नहीं हुए?

सवा अरब हिन्दू और 8-9 करोड़ गोमाता, वो भी ठण्ड में सड़कों पर थर-थर कांप रही है, पॉलिथीन खा करके प्राण त्याग रही है तो क्या हम हत्यारे नहीं हुए? आत्मावलोकन कीजिये, हम सब गोहत्यारे है। अरे हम हमारा दायित्व पूरा न करके गो की हत्या ही तो कर रहे हैं। सड़क पर खड़े रह कर जिन्दाबाद मुर्दाबाद के नारे लगाने से गोरक्षा नहीं होगी। गोरक्षा का सबसे पहला सूत्र अपने जीवन में को गो को अपनाना और फिर अपनों के जीवन में गो को अपनाना यही क्रम है। यह दो तरीके अपनाने के बाद भारत की सड़कों पर कहीं गोमाता के दर्शन नहीं होंगे। अगर दर्शन होंगे तो गोपालक साथ में होगा। अपने जीवन में पहले और फिर अपनों के जीवन में अर्थात् अपने उन्हीं को मानें जिनके घर पर गोमाता है।

अब हिन्दू भी कर रहा है गोतस्करी

(बैठे हुए लोगों को सम्बोधित करते हुए) आप लोग डग से आए हैं। डग में गो हत्यारों ने नौ नंदियों को एक पिकअप में भरा और सुनकर के शर्म आएगी कि वे किसी अन्य धर्म जाति के नहीं सारे क्षत्रिय थे। सुनकर शर्म भी आएगी कि जिनकी गाड़ी थी वह भी क्षत्रीय निकला। एक पिकअप में नौ नंदी कैसे भरे होंगे, आप अनुमान लगाइए। एक पिकअप में दो नंदी ठीक से नहीं आते हैं। गाड़ी को पार करने की तैयारी भी बड़ी जबरदस्त। झालावाड़ जिले से प्रसिद्ध संतरे बाहर जाते हैं उनके कार्टून भरभरकर नंदियों के ऊपर पार्टीशन कर ऐसे जमाये गये कि किसी को शक ही न हो कि इसमें गोवंश की तस्करी हो रही है। कार्टूनों के ऊपर पत्थर भर रखे थे ताकि गोरक्षक पीछा भी करे तो उसका काम तमाम कर दें। प्रमाण हैं इन सबके, प्रमाण हैं।

समझ में नहीं आता भैया जिस प्रकार से ये घटनाएं घट रही है, हिन्दू ही गो तस्करी करने लग गया? डग से धामनोद तक की दूरी कितनी होगी? हमारा अनुमान है 200 किलोमीटर से कम तो नहीं होगी। गोवंश को कसाइयों के चंगुल से बचाने के लिये 200 किलोमीटर तक गोरक्षक पीछा कर रहे है, इसके बीच में क्या कोई शासन और पुलिस नहीं है? कैसा कानून, कैसी स्थितियों हैं देश में। मां की रक्षा नहीं हो सकती उसी देश में बाकी लोगों की क्या रक्षा होगी महाराज? चेतना पड़ेगा, जागना पड़ेगा और हम लोग नहीं जागे तो महाराज फिर भारत छोड़कर भागना पड़ेगा कहीं हिंद महासागर में या अरब की खाड़ी में, बंगाल.........शेष पृष्ठ 9 पर

श्री भक्तमाल कथा

(पूज्य ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाशजी महाराज)

श्री कृष्ण गोभक्ति के माध्यम से अपने मध्य यह सुनहरा अवसर कोई मनुष्य के संकल्प से नहीं हुआ है। इस उत्सव के पीछे भगवान दत्तात्रेय और प्रत्यक्ष श्री द्वारीकाधीश भगवान की लीला है। पांच दिनों के अन्दर इतनी सुन्दर तैयारियों आप सब गोभक्त कार्यकर्ताओं ने मिलकर की है। यह बात सिद्ध करती है कि यह कार्य करना सहज नहीं था और हमारे पुरुषार्थ से भी यह संभव नहीं हुआ। यह कार्य भगवत संकल्प से संपादित हुआ। जगतजननी पूज्य गोमाता के ऐसे विलक्षण स्वरूप को शायद निकोल नगरवासियों ने, कर्णावती के वासियों ने पहली बार अनुभव किया होगा कि हमारे धर्म की, पूज्या गोमाता की इतनी महिमा है। गोमाता की महिमा अनंत है। वेद, पुराण और शास्त्र गोमाता की महिमा से भरे पड़े हैं। भारतीय नस्ल की देशी गोमाता को वेदलक्षणा गोमाता कहा जाता है। आजकल तो लोग गाय से मिलती जुलती आकृति वाले पशुओं को भी गोमाता समझने लग गये हैं। गाय वो है जिसका स्वरूप वेदों में गोमाता के बताये गये लक्षणों के अनुरूप हो। क्या वर्णन आया है वेदों में? गाय के दो बाहरी लक्षण बताए गए हैं, जिनकी पीठ पर ककुद है और गले में लटकती गल कम्बल है। ऐसे लक्षणों वाली जो गाय है उसी को वेदलक्षणा गोमाता कहा गया है। जर्सी, हॉलिस्टीयन आदि जो पशु हैं उन्हें गाय मानने की भूल न करें। गाय के अलावा दूध जैसा सफेद पदार्थ देने वाले अन्य सभी पशु हैं, पर वे गोमाता नहीं है।

इस वेदलक्षणा शब्द का प्रयोग धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज करते थे। उन्होंने 1966 में भारत में गोमाता को राष्ट्रमाता स्थापित करने के लिए बहुत बड़ा दिव्य आंदोलन किया था और पूरा जीवन उन्होंने गोसेवा में समर्पित किया था। इसीलिये तब से वे धर्म जगत में धर्म सम्राट के नाम से स्थापित हुए। कालक्रम में गायों की सेवा से सभी विमुख हो गए क्योंकि लोग गांवों से शहरों की ओर आने लगे। गाय का महत्व भूलने लगे। शहरों की भगदौड़ की जिन्दगी में आहार की शुद्धि और पवित्रता भूल गये। लोग आलसी हो गये जैसा भी मिल जाय खाने लगे। ऐसे में गोमाता से प्राप्त शुद्ध पंचगव्य उनके जीवन में गौण हो गये। शुद्ध पंचगव्यों का स्थान अशुद्ध खाद्य पदार्थों ने ले लिया। गोमाता को तो भूल ही गये पर स्वाथ्य की बात भी ध्यान में नहीं रखी। इस कारण शहरी लोगों ने गोमाता से किनारा कर लिया। गाँवों में माताएँ बहनें अभी भी गायों की सेवा करती है आ रही है लेकिन नई पीढ़ी गोमाता की सेवा करना बहुत कठिन मानती हैं, उनकी सेवा करने की कोई इच्छा नहीं है। क्योंकि गाँवों में भी नई पीढ़ी पढ़-लिखकर शहरी होने लगी है। सभी का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है, उसको भोग लेंगे लेकिन भोजन प्रसाद में खा रहे अगव्य पदार्थों को बंद कर शुद्ध सात्विक गव्य पदार्थों को अपनाने में पीछे रहेंगे। जिन पर गोमाता और परमात्मा की कृपा है वे अभी भी गोसेवा से किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं, वे भले ही शहर में रहे या गाँव में रहे।

पहले समाज में गोदान का नियम था, आम आदमी के व्यवहार में था। प्रत्येक पिता अपनी बेटी को विवाह में गोदान करता था। अपनी पुत्री को अब लोग विवाह में धन देने लग गये। जो गोधन था, वह 'गो' शब्द वहां से हट गया और यह 'धन' शब्द रह गया, रोकड़ और सिक्के के रूप में स्थापित हो गया। पहले जिसके घर में ज्यादा गाएँ होती थीं, वह आदमी सबसे सुखी और धनवान माना जाता था। माँ-बाप अपने बेटों बेटियों का संबंध ऐसे घरों में करते थे, जहाँ गायों की संख्या ज्यादा हो। और आज तो जिनके घर में, जिनके पास गोधन ज्यादा है, उनके

घर में उनके बेटे-बेटियों का विवाह करने से भी लोग बच रहे हैं।

गोमाता की महत्ता समझने के कारण प्राचीन काल में पूरे भारतवर्ष में गोमाता के दूध, दही, घी की नदियाँ बहती थीं, इसी कारण धरती माता को प्रचुर मात्रा में इतना गोबर प्राप्त होता था कि इस भारत की धरती हरी-भरी रहती थी और जो पूरे विश्व में भारत सोने की चिड़िया था। लेकिन कालक्रम में धीरे-धीरे गाय की महिमा कम होती गई। लोग भौतिकवाद की ओर मुड़ गए, भौतिकता की ओर पड़ गए और उन्हें मानने लगे। हमें सभी को हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित परंपरा थी। आप विचार करें सतयुग, द्वापर और त्रेतायुग में गाय की कैसी महिमा थी। यहाँ तक कि कलियुग में भी आज से 40 वर्ष पहले गोमाता बिना हमारा जीवन नहीं चल सकता था। हमारे भगवान गाय की पूजा करते थे और गाय की चरण रज को मस्तक पर लगाते थे, शास्त्रों में वर्णन है। देखिए, कहीं भी मिले तो गोमाता को प्रणाम करना चाहिए।

आप सभी जानते हैं कि जब राजा दिलीप शायद देवताओं से दानवों का युद्ध करके निकल रहे थे, तब कामधेनु माता ने ऐसा विचार किया कि दिलीप को मैं आशीर्वाद दूँ, राजा दिलीप को आशीर्वाद दूँ, पर राजा दिलीप की गोमाता पर अपनी दृष्टि नहीं गई और सीधे-सीधे निकल गए। बिना प्रणाम किए निकल जाने का अपराध राजा दिलीप को लगा। और राजा दिलीप का जो वंश था उसकी वृद्धि रूक गई।

नारायण, नारायण, नारायण! मेरे-भाई-बहनों गोमाता कभी किसी पर नाराज नहीं होती और न किसी को श्राप देती है तो राजा दिलीप को श्राप क्यों लगा? कारण कि गाय के रोम-रोम में 33 करोड़ देवता विराजमान हैं। गाय के सींगों के मूल में ब्रह्मा और विष्णु का निवास है, गाय के सिर के मध्य में शिव का निवास है, ललाट में मां भगवती पार्वती विराजमान है, गाय की श्रोणी में सभी पितर विराजमान हैं, गले में इंद्र बिराजमान है। लक्ष्मीजी गाय के गोबर में निवास करती है। गाय के गोमूत्र में गंगा का निवास है। आज गंगा जी तो पवित्र से पवित्र नदी है जिसमें स्नान करने से व्यक्ति पवित्र हो जाता है। वह गंगा जी गाय के गोमूत्र में वास करती है। शायद गटर का पानी गंगा जी में मिल सकता है और वह नदी अपवित्र तो नहीं, पर अशुद्ध उसे कहा जा सकता है। जल में अशुद्धि होती है, लेकिन गाय का गोमूत्र, गाय का झरण तो ऐसा है कि वह तो एकदम शुद्ध होकर पवित्र होकर आता है। उसमें कभी गंदगी नहीं मिल सकती।

इसलिए हमारे ऋषि पंचगव्य पान करते थे। गाय का गोबर, गोमूत्र, घी, दूध दही, इन पांच गव्यों को बराबर मात्रा में मिलाकर जो पंचगव्य का प्राशन करता है वो ही मनुष्य पूजा का अधिकारी बनता है। कोई भी यज्ञ, उपासना, सोलह संस्कारों में सबसे पहले पंचगव्य का प्राशन किया जाता है। पंचगव्य के बिना कोई संस्कार नहीं किया जाता है। जहाँ पूजा करनी होती है वहाँ सबसे पहले गोमूत्र छिड़ककर गोबर का लेपन किया जाता है जिससे जगह पवित्र होती है।

तो इतने सारे देवता गोमाता में निवास करते हैं। राजा दिलीप ने जब प्रणाम नहीं किया तो गोमाता कामधेनु तो वात्सल्यमयी है, वो नाराज नहीं हुई। एक कहावत हैं कि माता कभी कुमाता नहीं हो सकती, पुत्र कपुत्र हो सकता है। तो राजा दिलीप को श्राप किस अपराध का मिला? सभी देवता अप्रसन्न हुए कि हम जिसके सानिध्य में आकर निवास करते हैं, ऐसी इस पवित्र से पवित्र गोमाता को राजा दिलीप ने प्रणाम नहीं किया। प्रणाम किए बिना कैसे निकल गए? एक रहस्य की बात कहूँ, आप सबको। गोमाता ऐसे पवित्र नहीं है कि उसमें 33 कोटि देवता निवास करते हैं उस कारण पवित्र है बल्कि गोमाता पवित्र पवित्र थी इसलिये 33 करोड़ देवताओं ने गाय का आश्रय लिया। एक बार देवताओं की संगोष्ठी हुई और सभी देवताओं ने विचार *...शेष पृष्ठ 28 पर .*

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

गोविन्दा, गोविन्दा वेंकटरमणा गोविन्दा! भक्तवत्सल, कृपासिंधु, दीनबंधु श्री वेंकटेश प्रभु की महति करूणा कृपा से जगत जननी पराअम्बा भगवत् आराध्या पूज्या गोमाता की वात्सलयमयी कृपा से आप हम सबको श्रीबालाजी महाराज चातुर्मास मंगल महोत्सव के अंतर्गत परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराज की मंगलमयी सन्निधि में पूज्य संतों की पावन सन्निधि में, चातुर्मासव्रती साधकों की पावन सन्निधि में श्रीमदभागवत की मंगलमयी कथा के माध यम से मनुष्य जीवन प्राप्त करने का सर्वोत्कृष्ट फल 'सत्संग' है वह सुलभ हो रहा है। हम सब लोग परम् सौभाग्यशाली हैं कि इस चातुर्मास की अवधि में परम् श्रद्धेय पथमेड़ा महाराजजी की पावन सन्निधि में श्री तिरूपति बालाजीधाम में हम लोगों को केवल रहने का ही नहीं अपितु उनकी सन्निधि में हरिहर आराधना का सौभाग्य भी प्राप्त कर रहे हैं हम लोग।

अत्यन्त सुदुर्लभ मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है हम सब लोगों को वो भी भारत भूमि पर। हमारी जो आयु है वो निरन्तर कम होती जा रही है। हम लोगों को तो लग रहा है कि सूर्य उदय हुआ और अस्त हुआ लेकिन वेदव्यास जी कह रहे हैं कि सूर्य केवल उदय और अस्त नहीं हो रहा है, उसके द्वारा हम लोगों की आयु का हरण किया जा रहा है। उसमें सफल क्षण कौनसा है? तब बताते हैं जिस समय उत्तम श्लोक की बातें की जाय वो सफल क्षण है। उत्तम श्लोक क्या है? अभी परम् श्रद्धेय पथमेड़ा वाले महाराज जी ने बताया कि यह भगवान की कथा नहीं है, यह भागवतों की कथा है। पूज्य सद्गुरुदेव श्री मलूकपीठ वाले महाराज जी उत्तम वार्ताया की दो व्याख्याएं करते हैं। उत्तम ध्रुव और प्रहलाद के द्वारा जिसका गान किया जाता है वह कौन है? भगवान है और उत्तम श्री राम व कृष्ण के द्वारा जिनका भजन गाया जाता है वे कौन है? भक्त हैं भगवान के। अर्थात् जिस समय में भक्त और भगवान की बातें की जाय वो ही समय हमारा सफल है। ऐसा पावन दुर्लभ अवसर हमको यहाँ 2 महीने के लिये सुलभ हुआ है।

हमारा भारतवर्ष जो है, हमारी सनातन संस्कृति जो है वह महात्म्य प्रदान है। हम लोगों को मनुष्य शरीर मिला तो क्यों मिला? मनुष्य जन्म में आकर क्या करना है, हमारा लक्ष्य क्या है? महाराज जी बताते हैं कि मनुष्य जन्म में आने के बाद 5 बातें जाननी चाहिये। हम मनुष्य शरीर प्राप्त किये हैं तो हमारा प्राप्य क्या है? हमें किस चीज को प्राप्त करना चाहिए? दूसरा है उसकी प्राप्ति का उपाय क्या है? तीसरी चीज है उसकी प्राप्ति में बाधा क्या है? चोथी चीज है उसकी प्राप्ति का फल क्या है? पांचवा और अंतिम है वो प्राप्ता कैसा होगा? यह ज्ञाप्ति पंचक है।

हर मनुष्य को, कल्याण चाहने वाले हर पथिक को ये बातें जाननी चाहिए। हमारा प्राप्य क्या हो सकता है? बहुत सारे रुपए, धन, पद आदि सब प्राप्त करने से क्या हमारे मन की इच्छा क्या शांत हो जायेगी? मन तृप्त हो जायेगा? नहीं होगा। हम ऐसी चीज प्राप्त करें जिसके प्राप्त करने के बाद कुछ भी प्राप्त करना शेष न रह जाय। वे एकमात्र प्रभु ही हैं जिनको प्राप्त करने के बाद मन की कोई लालसा नहीं रहती है। अर्थात मनुष्य जन्म में प्राप्त करने योग्य हैं तो केवल हरि ही हैं। क्योंकि किसी व्यक्ति को इस पृथ्वी का सम्पूर्ण सम्राट भी बना दिया जाय तो क्या वह पूर्णरूपेण संतुष्ट हो सकता है? नहीं हो सकता है?

गरीब भी दुःखी है और सम्पूर्ण पृथ्वी का जिसके पास एकछत्र राज है वह भी दुःखी है। लालसा में दुःखी है, तृष्णा में दुःखी है। दीन कहे ध नवान सुखी, धनवान कहे सुख राजा को भारी। राजा कहे सुख महाराज को, महाराज कहे सुख इंद्र को भारी। इंद्र कहे सुख चतुरानन को, ब्रह्मा कहे सुख

विष्णु को भारी। तुलसीदास विचार करी कहे हरि भजन बिना सब जीव दुखारी। कोई सुखी नहीं है। अपने से जो ऊंचा होता है उसको देखकर के, उसके ऊंचे पद को, उसके अधिक धन को देखकर के दूसरे के मन में भी तृष्णा जगती है कि मेरे पास भी इतना धन हो, मेरे पास भी ऐसा पद हो। तो हमारा प्राप्य कैसा हो कि जिसको प्राप्त करने के पश्चात कुछ भी जानना, कुछ भी प्राप्त करना अवशिष्ट न रहे। वह हमारा प्राप्य है।

हम कोई चीज प्राप्त करते हैं तो जैसे हम भोजन करने जा रहे हैं, उससे पहले आटा लाना, सब्जी लाना, कितने सारे प्रपंच होते हैं तब जाकर के भोजन तैयार होता है। तो जब हम प्राप्य को प्राप्त करने चलेंगे, प्राप्य को प्राप्त करने की मन में इच्छा रखेंगे तो उसको प्राप्त करने का उपाय क्या है? प्राप्य की प्राप्ति का उपाय भक्त और भगवान की चर्चा और सत्संग का आश्रय। यह उसके उपाय है। सत्संग के माध्यम से ही परमात्मा सुलभ हो सकता है। जब परीक्षित जी गंगा तट पर अनशन पूर्वक विराजमान होते हैं तब वे एक ही प्रश्न करते हैं श्री सुखदेव जी महाराज से कि मरने वाले व्यक्ति को क्या करना चाहिए तब वे बताते हैं कि श्रवण करो, कीर्तन करो, स्मरण करो। तो भगवान की प्राप्ति का एकमात्र यही उपाय है कि भगवान का स्मरण किया जाए, उनका कीर्तन किया जाए, उनकी कथा को अपने करणों से श्रवण किया जाए। यह उसे प्राप्त करन का उपाय हैं।

हम कोई भी अच्छा काम करने चलते हैं तो उसमें बधाएं भी आती है प्राप्ति का उपाय सत्संग है तो उसकी प्राप्ति में बाधा क्या है? हर किसी चीज में बाधाएं, धन कमाने में बाधाएं हैं, भोजन बनाने में बाधाएं हैं, हर किसी कार्य को करते हैं तो उसमें चुनौतियां तो होती ही है। ऐसे ही हम जब परमात्मा की प्राप्ति के लिए अग्रसर होते हैं तब यह जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य ईर्ष्या आदि ये जो दुर्गुण है ये हम लोगों को रोकते हैं, परमात्मा की ओर न जाने देना चाहते हैं। अपनी और आकृष्ट करते हैं, हमारे मन पर वे अपना प्रभाव जमाते हैं।

चौथा है परमात्मा प्राप्ति का फल क्या है?

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्शीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

उस प्राप्य की प्राप्ति हो जाने पर हमारे हृदय ग्रन्थी का भेदन हो जाता है। हमारे जो संचित और क्रियमाण प्रारब्ध है वे नष्ट हो जाते हैं और अभी जो महाराज जी ने तीन सूत्र बताये- सर्वभूतहिते रता, आत्मवत सर्वभूतेषु और वासुदेव सर्वम् की दृष्टि प्राप्त हो जाती है।

पांचवी और अंतिम चीज है प्राप्ता कैसा होना चाहिए? ममैवांशो जीवलोके जीवभूत सनातन। हम परमात्मा के अंश है ऐसा जिसके अंदर बोध है वह सच्चा प्राप्ता है। जो अपने आपको परमात्मा का अंश माने- ईश्वर अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुखराशि।

तो मनुष्य जीवन प्राप्त करने वाले हर प्राणी को यह पांच बातें जाननी चाहिए। हम चर्चा कर रहे थे कि हमारी जो सनातन संस्कृति है वह महात्म्य प्रधान है। गंगा स्नान क्यों करते हैं? द्विजाति संस्कार क्यों करते हैं? चोटी क्यों रखते हैं? जनऊ क्यों पहनते हैं? ब्राह्मण को प्रणाम क्यों करते हैं? सत्संग क्यों सुनते हैं? हर किसी का महात्म्य है। यह भारतवर्ष महात्म्य प्रधान देश है। अरे और तो और हमारे शरीर का भी तो महात्म्य बताइए ना। जो विनाशी शरीर है उसका भी महात्म्य है।

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनम्।।

यह मनुष्य शरीर दुर्लभ है, क्षणभंगुर है, विनाशी है तो भी इसका बहुत महात्म्य है क्योंकि यह ऐसा होते हुए भी अविनाशी परमात्मा की प्राप्ति कराने में सहयोगी है। इसलिए -

सच्चीदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे!
तापत्रय विनाशाय श्री कृष्णं वयं नमः!!

सुखदेव जी को प्रणाम है नमस्कारसर्वभूत हृदय कौन

श्रीमदभागवत जी के महात्म्य के प्रथम श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति की है वह कृष्ण कैसे हैं? सत् स्वरूप, चित्त स्वरूप, आनंद स्वरूप। सत् का अर्थ क्या है? सत्य सोई जो विनशे नाहीं । जो सदा सर्वदा रहता है वह सत् है। सत् स्वरूप परमात्मा है।

जब माता देवकी के गर्भ में भगवान श्री कृष्ण निवास करते हैं उसी समय देवता स्तुति करते हैं तो सत्य सत्य स्वरूप परमात्मा का 9 बार नाम लेकर परमात्मा की स्तुति करते हैं। वह परमात्मा सत्य स्वरूप है, जगत प्रकाश है। जैसे हमें प्रकाश की आवश्यकता पड़ रही है ऐसे हमारे श्री राम जी को हमारे श्री कृष्ण जी को आवश्यकता नहीं पड़ती है। हमारे आंख में प्रकाश की शक्ति नहीं है। होती तो हम रात को भी देखते। इसमें जो प्रकाश की शक्ति है वो परमात्मा देते हैं। तो जो परमात्मा है वो प्रकाश स्वरूप है।

और तृतीय विशेषण दिया आनंद स्वरूप। वह आनंद जो सदा सर्वदा रहे, ऐसा नहीं की अभी थोड़ी देर पहले रसगुल्ला खाया और बहुत अच्छा लगा, मीठा लगा, उसका आनंद है। वह आनंद नहीं आनंद तो एक परमात्मा है जिसके नाम लेने से पूरा शरीर कम्पायमान हो जाए। हमारी आंखों से आनंद स्वरूपी अश्रु की धारा बहे। हमारी जो पुलकावली है वह रोमांचित हो उठे। हमारा हृदय द्रवित हो उठे ऐसा आनंद जो होता है वह आनंद स्वरूप परमात्मा है।

वह परमात्मा करता क्या है? विश्वोत्पत्यादिहेतवे! विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय का वह कारण है। परमात्मा जब आनंद मग्न होते हैं तब पृथ्वी पर प्रकृति का, इस विश्व का सृजन करते हैं। थोड़े गंभीर होते हैं तो पालन करते हैं और थोड़ी भृकुटी टेडी करते हैं तो उसका लय, उसका नाश कर देते हैं। तीनों में वही परमात्मा है। दैविक, देहिक और भौतिक ये जो तीन प्रकार के ताप है इनका भी नाश करने वाले हैं और वही परमात्मा इस संसार चक्र को नचा रहा है। भगवान श्री कृष्ण को ही देख लो कौरव और पांडवोंके युद्धमें किसी की ओर ..शेष पृष्ठ 6 पर .

....पष्ठ 25का शेष... किया कि ऐसा इस धरती पर कौनसा स्थान है जहाँ हम सभी एक साथ निवास कर सकें। विन्ध्याचल, हिमालय, पवित्र नदियों और अनेकों तीर्थो का विचार किया गया पर जो हमें एक साथ स्थान मिल सके पर निर्णय नहीं हुआ। अंत में देवताओं ने निर्णय किया कि अगर इस धरती पर इस ब्रह्माण्ड में, सत्यलोक में, 14 भुवनों में पवित्र से पवित्र कोई स्थान है जहाँ हम सभी एक साथ आकर निवास कर सकें, तो वह जगत जननी गोमाता हैं। और तब सभी देवताओं ने आकर गोमाता के अंदर निवास किया। माताएँ बहनें थोड़ा बुरा मत मानना। सभी देवता तो आ गये, पर लक्ष्मीजी में थोड़ा सूक्ष्म अहंकार, वे आई नहीं। लेकिन जब पूरा समाज एक ओर होता है और हम अकेले रह जाते हैं, तब हमारी क्या दशा होती है, बताओ? इसलिए हमेशा समाज के साथ रहना चाहिए। समाज में एक मत रहना चाहिए। समाज के नेतृत्व को स्वीकार करना चाहिए और यदि हम समाज के नेतृत्व को स्वीकार नहीं करेंगे, तो नुकसान हमें होगा समाज को नहीं।

लक्ष्मीजी पीछे रह गए, फिर अंत में आए और गोमाता को प्रणाम किया कर बोले- हे भगवती! हे परम्बा! मुझे आपके अंग में स्थान दें। मुझे निवास दें तब गोमाता ने कहा, हे देवी! आप कौन हैं? तब लक्ष्मीजी ने कहा कि आप मुझे नहीं पहचानती? गोमाता ने कहा हे देवी, मैं आपको नहीं पहचानती। लक्ष्मीजी का अहंकार टूटा और लक्ष्मी जी बोली मैं श्री हरि की अर्धांगिनी हूँ। अच्छा! अच्छा! पर हे देवी, मेरे शरीर में देवता आकर निवास कर चुके हैं। अब तो एक ही स्थान बाकी रह गया है। देवी! वह कौनसा स्थान बाकी है? गोमाता बोली- मेरा गोमय। आप मेरे गोबर में आकर निवास करो और भगवती लक्ष्मीजी ने गोमाता के गोबर में आकर निवास किया।

नारायण इसी गोबर से पूरे भारत में खेती होती थी युगों युगों से और यह गोबर यानि लक्ष्मी है और लक्ष्मी के प्रभाव से हमारे .....*शेष अगले अंक मे*

स्थानीय नस्लों को प्राथमिकता दें

(अम्बा लाल सुथार)

संसार में प्राकृतिक जलवायु के भेद के कारण अलग-अलग क्षेत्रो में अलग-अलग नस्ल का वेदलक्षणा गोवंश पाया जाता है। क्षेत्र विशेष का गोवंश उस क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढ़ाल लेता है। उसका शरीर तंत्र उस क्षेत्र विशेष में सर्दी-गर्मी, बरसात, चारा, पानी, भूमि, पहाड़, पठार, नदियों, मरूस्थल आदि के अनुसार बन जाता है। जैसे हिमालय की घाटियों में रहनें वाले गोवंश को गर्मी के मौसम में बाड़मेर के गर्म टीलों में रखना चाहें तो वह उसे सहन नहीं कर सकता। ऐसे ही बड़े शरीर और बड़े सींगवाली कांकरेज नस्ल को पहाड़ों पर रखना चाहें तो उसका चढ़ना-उतरना सम्भव नहीं होगा तथा गिरते ही सींग टूट जायेंगें। जो शुष्क व मरुस्थलीय प्रजातियाँ हैं उन्हें अधिक आद्र व ज्यादा बरसात वाले क्षेत्रों में रखेंगे तो उसके खुरों में कीड़े पड़ जायेंगे तथा सींगों का केंसर भी जल्दी हो सकता है। ऐसे ही उनका भोजन भी अलग-अलग होगा। जहाँ बाजरे की फसल होती है, उस गोवंश को सूखा मक्का का भूसा सुपाच्य नहीं होगा। हाँ गोवंश मजबूरी में जीवन निर्वाह तो कर सकता है लेकिन सुखपूर्वक स्वस्थ नहीं रह सकता। फिर संवर्धन और उन्नत नस्ल की तो कल्पना भी नहीं करनी चाहिए।

गोवंश कोई खिलौना नहीं है कि देखकर जो सुन्दर लगे, मन को भावे उसे किसी भी क्षेत्र से लाकर अपनी गोशाला की शोभा बढ़ावें। हमारे पास देशभर से फोन/पत्र आते हैं कि हमको पथमेड़ा से कुछ गोवंश दीजिए। हम उनकी अच्छी प्रकार से सेवा करेंगे। जब उनको पूछते हैं कि आपके क्षेत्र की नस्ल को सेवा में क्यों नहीं रखतें हो तो प्रतिउत्तर मिलता है कि उनकी नस्ल अच्छी नही रहीं। दूध बहुत कम होता है, बहुत कमजोर है। हमको तो हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर गायें चाहिये।

ईमानदारी से सोचें, अगर आपके क्षेत्र में कम दूध वाला कमजोर गोवंश है तो उसमें गोवंश का क्या दोष है? उसको जैसा हमने रखा वैसे रहा। जब हमने सेवा ही नहीं की तो नस्लों का ह्रास होता गया और दूध की मात्रा गिरती गई। सभी नस्लों में यही हालत है। दूर के ढ़ोल सुहावने लगते है। गोसेवा वाले गोभक्तों व गोसेवी संस्थाओ से प्रार्थना है कि गोसेवा-गोसंवर्धन में सर्वप्रथम जो आवश्यक बात है वो यह है कि स्थानीय नस्लों के अलावा अन्य नस्ल को मस्तिष्क में भी नहीं आने दें। अपने क्षेत्र की गोनस्लों की ही सेवा करनी है, उसका ही संवर्धन करना है। जैसे राजस्थान के झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर व मध्यप्रदेश में मालवी नस्ल होती है जो छोटी-छोटी गैया होती हैं। यह पूरा क्षेत्र मालवे का पठारी क्षेत्र है। उबड़-खाबड़ क्षेत्र, अधिक बरसात। इसलिए शरीर छोटा चाहिए। शरीर छोटा है तो दूध भी कम ही होगा। ऊपर से नस्ल का क्षरण होने से दूध 1 किलो तक आ गया। लेकिन यह भी तो है कि वो चारा भी उसी अनुपात में दूसरी नस्लों से कम खाती है।

इसके लिये उपाय हम करेंगें तभी जाकर नस्लें भी सुधरेगी और दूध भी बढ़ेगा। कोई भी नस्लें गिरी भी कई वर्षो में है तो सुधरने में भी कुछ समय तो लगेगा ही। एकदम कोई चमत्कार नहीं हो सकता। हमको धैर्यपूर्वक गोसंवर्धन करना होगा।

दो-तीन पीढ़ी में उसी गाोवंश को काफी हद तक हम उन्नत कर सकते हैं। हम चाहें कि रातों-रात ही कोई सुधार हो जाये तो यह सम्भव नहीं है। जितना समय नस्लों के बिगड़ने में लगा है उसका आधा समय तो सुधार हेतु दोगे? लेकिन हम चाहतें हैं कि गिरे हुए नस्ल की उपेक्षा करके उसके ऊपर बाहरी कोई नस्ल लाकर थोप दें तो यह स्थानीय गोवंश और प्रकृति के अनुकूल निर्णय नहीं है। अपने क्षेत्र के गोवंश की कमजोर नस्ल को देखकर हिम्मत नहीं हारनी है, उसे उच्च से उच्च स्तर पर ले जाने हेतु संघर्ष करना है। यही सच्ची गोसेवा होगी और गोवंश के साथ न्याय होगा। कमजोर को स्वस्थ, सुडोल, सुन्दर बनाना ही उनकी सेवा है। कमजोर का त्याग करके उपेक्षित हालत में दर-दर की ठोकरें खाने हेतु छोड़ देना, उसकी उपेक्षा करना, उसके स्थान पर अन्य क्षेत्रों से दूसरी नस्ल का गोवंश लाना तो स्थानीय गोमाता के साथ भारी अन्याय करना है।

बहुत से लोग अधिक दूध के लालच में घरों में भी अन्य क्षेत्रों की गोमाता ले आते हैं, उनके सामने सबसे पहली समस्या नंदी की आती है। एक गोमाता के लिये या तो साथ में उसी नस्ल का नंदी भी लाओ या फिर क्रत्रिम गर्भाधान का रास्ता बचता है जो कि पूर्ण अप्राकृतिक है।

एक प्रत्यक्ष घटित घटना को यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। 2017 की गोपाष्टमी की बांसवाड़ा के पास तलवाड़ा की घटना है। तलवाड़ा में पहाड़ी पर एक गोशाला है उसमें गोपाष्टमी का पर्व मनाया जा रहा था। बांसवाड़ा के गोभक्त श्री भुवन जी पण्ड्या के साथ दास को भी कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला। हम वहाँ पहुँचे तब तक गोमाता की झांकी पहाड़ी से उतरकर सामने आ रही थी। इसलिये हम झांकी में सम्मिलित होने के लिये एक तरफ सड़क किनारे खड़े हो गये। जैसे ही झांकी निकट आई हमारे पीछे से भागती हुई चार स्थानीय नस्ल की दुबली-पतली गोमाताएं आई, झांकी के निकट रूकी, झांकी के दर्शन कर हम दोनों की ओर मुँह करके संकेत में डांटते फटकारते हुए यह कहने लगी कि आप अपने को गोभक्त समझते हो? आप तो दूध के भक्त लगते हो तभी हमारे होते हुए बाहर की गायों को लाये हो। आपने यह ठीक नहीं किया। हमारा त्याग करके आप गिर नस्ल की गायों को झांकी में सजाकर पूरे गांव में घुमाओगे और हम यहाँ भूखी-प्यासी दर-दर भटक रही हैं। आपके मन में हमारी कोई इज्जत नहीं? हमारा दोष क्या है जो आपने हमारा बहिष्कार किया? क्या आप हमारे प्रश्न का उत्तर दे सकते हो? धिक्कार है तुम्हें।

हमको ऐसा भाव अनुभव करवाकर वे चारों गोमाताएं झांकी के आगे से सड़क पार करते हुए कहीं जंगलों में समा गई। गोमाता द्वारा दिया गया उलाहना हमारे हृदय को चीरकर निकल गया। उस दिन झांकी में एक स्थानीय गोमाता के अलावा सभी गिर नस्ल की गोमाताएं थी। अपने स्थान पर बाहरी गोमाताओं को देखकर वे नाराज थी। उस दिन के बाद इस घटना को हम आज दिन तक नहीं भुला पाये और सदैव स्थानीय नस्लों की सेवा का पक्ष लेते हैं। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा में अन्य क्षेत्र से कई लोग गोमाताओं को अपने क्षेत्र में ले जाने हेतु आते हैं। अगर कोई मुझे निर्णय का कहते हैं तो यहाँ से गोमाताओं को अन्य क्षेत्रों में ले जाने के पक्ष में निर्णय नहीं देता हूँ। अधिक बरसात वाले क्षेत्रों में यहाँ के गोवंश के पांवों में कीड़े पड़ने की सम्भावना रहती है, ऐसा हमने बांसवाड़ा में देखा है।

मार्च माह में हुए परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज के प्रवास का संक्षिप्त वृत्तांतः

निकोल कर्णावती में स्थानीय गोभक्तों द्वारा 6 से 10 मार्च तक श्री भक्तमाल कथा का आयोजन रखा गया। पूज्य ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाश जी महाराज की मधुर वाणी में कथा सम्पन्न हुई। कथा के चतुर्थ दिवस पर परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज ने गोभक्तों को अपना पावन सानिध्य प्रदान किया। इस अवसर पर महाराज जी ने गोपूजन कर उपस्थित समस्त गोभक्तों को अपने जीवन में नियमित गोगव्यों के सेवन और गोसेवा की प्रेरणा दी।

होली के पर्व पर परम् भागवत श्री गोऋषि जी महाराज श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा, श्री ठाकुर गोसेवा आश्रम पालड़ी, श्री खेतेश्वर गोसेवा आश्रम खिरोड़ी आदि गोसेवा प्रकल्पों में पधारे। होली के पवित्र त्यौहार पर इन गोसेवा आश्रमों में सेवारत गोसेवकों को प्रसाद भेंट की और भाव से गोसेवा करने की प्रेरणा दी।

निकोल कर्णावती में ६ से १० मार्च तक सम्पन्न हुई श्री भक्तमाल कथा:

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के तत्वाधान में निकोल, कर्णावती महानगर के गोभक्तों द्वारा पूज्य ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाश जी महाराज की मधुर वाणी में 5 दिविसीय भक्तमाल कथा का आयोजन रखा गया। इस कथा में कर्णावती महानगर के गोभक्तों ने बढ़चढ़कर गोग्रास सेवा की।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की नई शाखा का हुआ शुभारम्भ: बाड़मेर जिले की धोरीमना तहसील के गाँव सियागोंकी बेरी आलेटी में गोभक्त श्री रामेश्वरदयालजी सोनी, बाड़मेर द्वारा 30 बीघा भूमि श्री सनातन गोसेवाश्रम पथमेड़ा को दान दी गई जिस पर 11 मार्च को पू. गोशरण नंदरामदासजी महाराज के पावन सानिध्य में गोसेवा आरम्भ की गई।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने श्री कामधेनु गो अभ्यारण्य सालरिया में मनाया अपना ६१ वां जन्मदिन:

डॉ मोहन यादव मुख्यमंत्री म.प्र. द्वारा अपनी गोभक्ति और गोप्रेम का परिचय देते हुए 7000 गोमाताओं के मध्य पूज्य संतों के पावन सानिध्य में और हजारों गोभक्तों की उपस्थिति में 25 मार्च को अपना 61वां जन्मदिन उत्सव मनाया। आपने गोपूजन कर गो अभ्यारण्य की समस्त गोमाताओं को लड्डू और लापसी का प्रसाद करवाया। इस अवसर पर डॉ यादव ने गो अभ्यारण्य में शासन द्वारा 4.26 करोड़ की लागत से निर्मित 4 चारा गृह तथा 42 लाख की लागत से निर्मित 12 ग्वाल आवास गवार्पित किये। इस अवसर उन्होंने गो अभ्यारण्य में स्थापित ग्वाल प्रशिक्षण केन्द्र, श्री कामधेनु गुरुकुलम का शुभारम्भ भी किया तथा श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा प्रकाशित गोसेवक प्रशिक्षणमाला नामक पुस्तक का विमोचन भी किया।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा न्यास की ओर से कार्यकारी अध्यक्ष श्री रधुनाथसिंह जी राजपुरोहित, प्रबंध न्यासी श्री ब्रह्मदत्त जी पुरोहित, श्री भूरसिंहजी राजपुरोहित, श्री अम्बा लाल सुथार व मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक जी सिंहल द्वारा माला पहनाकर स्वागत किया। पूज्य ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज द्वारा मुख्यमंत्री जी को उनके 61 वें जन्म दिन पर मंगल कामनाएं और आशीर्वाद प्रदान किया।

मुख्यमंत्री जी द्वारा गो अभ्यारण्य को कुण्डालिया बांध से सिंचाई के लिये शीघ्र ही जल उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

श्री कामधेनु गो अभ्यारण्य सालरिया म.प्र. में सम्पन्न हुआ एक वर्षीय गो आराधना महामहोत्सव

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मध्य प्रदेश के निराश्रित गोवंश के संरक्षण हेतु सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में भारतीय नूतन संवत 2081 को "गोवंश रक्षा वर्ष" घोषित किया गया था। इसके तहत मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित विश्व के प्रथम श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में दिनांक 9 अप्रेल 2024 से 29 मार्च 2025 तक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराजके पावन सानिध्य में, पूज्य ग्वालसंत श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज की पावन उपस्थिति में और देशभर के पूज्य संत महात्माओं, विप्रों के मार्गदर्शन में व गोभक्तों की उपस्थितिमें एक वर्षीय वेदलक्षणा गो आराधना महामहोत्सव का दिव्य और भव्य आयोजन किया गया। लगातार एक वर्ष तक पूज्य ग्वालसंत श्री गोपालानंदजी सरस्वती जी महारज ने मधुर वाणी में गोकथा श्रवण करवाई। एक वर्षीय कथा के मुख्य यजमान अहमदाबाद के परम् गोभक्त श्री चिमनभाई अग्रवाल रहे।

इस आयोजन के समापन दिवस पर स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज ने बताया कि भारत को भारत की संस्कृति चाहिए और भारत की संस्कृति का प्राण गोमाता है और उसी के लिए मंगल पांडे ने आज ही के दिन 1857 में बंदूक उठाई थी। मंगल पांडे को अंग्रेजों ने फांसी तो दे दी लेकिन वे उनके विचारों को नहीं मार पाए और आज भी उनके विचार जीवित है और उनके विचारोंको जीवित रखने के लिये गोसेवा ही एक सर्वोत्तम साधन है। गोमाता की सेवा कर मनुष्य परमात्मा के पास जा सकता है

एक वर्षीय वेदलक्षणा गो आराधना महामहोत्सव के समापन पर्व एवं उपसंहार उत्सव पर पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज ने बताया कि प्रारंभ में लोग आश्चर्य करते थे कि एक वर्ष की भी कोई कथा होती है क्या? क्योंकि जो पुस्तकीय ज्ञान से कथा करते हैं उसकी एक सीमा होती है, लेकिन पूज्य स्वामी श्री गोपालानंद जी महाराज ने जो एक वर्ष की कथा श्रवण करवाई है वह भगवती गोमाता जो सब वेद पुराणों को अपने अन्दर समाहित रखती हैं उसकी कथा उसी के सम्मुख वर्षभर गाई गई है और भगवती गोमाता की महिमा तो इतनी है कि उसे पांच वर्ष में भी पूरा नहीं किया जा सकता है। साथ ही बताया कि इस सृष्टिमें सबसे सर्वश्रेष्ठ ध्यान गोमाता के नेत्रोंको देखकर करने को बताया और कहा कि आपने गोमाता की आंखों को निरंतर देखा तो आपको गोमाताकी आंखों में साक्षात श्रीकृष्णके दर्शन होंगे।

एक वर्षीय महामहोत्सव के समापन पर्व पर स्वामी देवानंद सरस्वती जी, लक्षानन्द जी बावजी, प्रकाश बाबाजी, चंद्रमदास जी महाराज एवं यज्ञाचार्य पं.गंगाधरजी पाठक, न्यास के पूर्व अध्यक्ष राजकुमारजी अग्रवाल वं उपस्थित सभी संतो एवं विद्वानों ने भगवती गोमाता की महिमा को बताया। सभी संतो ने एक स्वर से कहा कि आज कथा का समापन नहीं बल्कि एक विराम है और यह क्रम निरंतर चलते रहना चाहिए। इस पर पूज्य स्वामी गोपालानंद सरस्वती जी ने बताया कि शेष कथा का क्रम जारी रहेगा। एक वर्षीय महामहोत्सव के मुख्य यजमान श्री चिमन भाई अग्रवाल अहमदाबाद के परिवार एवं इस महोत्सव में हर प्रकार से सहयोग करने वाले सभी सज्जनों का आभार जताया। एक वर्षीय महोत्सव के समापन दिवस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के श्री शंकरलाल जी भाईसाहब, म.प्र.गो संवर्धन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री मेघराजजी जैन व गोसेवा विभाग मालवा प्रान्त के अधिकारी आदि उपस्थित....शेष पृष्ठ 17 पर

हिन्दी मासिक पत्रिका "कामधेनु-कल्याण" स्वामी "श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा" के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर "श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला" पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा निर्मित वेदलक्षणा पंचगव्यामृत

राज्य एवं शहरवार वेदलक्षणा स्टोर

राजस्थानः-आनन्दवन पथमेड़ा- 7073000148, गोलोकतीर्थ नन्दगाँव- 7073000102,
सांचोर- 9549303737। सिरोही- 9414533212, 7014020269। रेवदर- 9413464862। आबू रोड-9414769350। 9460795056
बालोतरा- 9571115151। नाथद्वारा-9413953307। गुडामालानी-8097131008 जयपुर- 9352418443, 9829050489 ,
9414113363। उदयपुर- 992918887। श्रीगंगानगर-9414502652। जोधपुर-9414145448, 9414701965, 9929751789
आमेट-8696500500। भीलवाड़ा-9413357589। चित्तोड़गढ-8764332790,9460365209 कोटा-9460847509,
9414180317,7689888999। भीनमाल-8955114669 ,9602963605,सुमेरपुर-9680263505। डिडवाना-9413188398।
पाली-9166924752,9636410019। बाड़मेर-7023512779।

गुजरातः- (मुख्य कार्यालय) वैदिक गो उत्पाद फाउण्डेशन, अहमदाबाद- 7300044444
ओढव-9898995533। निकोल-8511527846। बोडकदेव-8128363333। गुरूकुल-8469099499 । वस्त्राल -8401552613।
बोपल-9898890328 । खोखरा-9831799918। शीलज-9784603691। जगतपुर-9229929687। मणिनगर- 9376626059।
CTM- 9828803551 । डिसा-9499690985। मेहसाणा-9265179385 । राजकोट-9510321221। थरा- 9979881942 ।
टेटोड़ा- 9724325328। हिम्मतनगर- 9427364528 । सूरत- 8160203183 ,9028230690,9825161296,9636717511 ।
जामनगर- 6353804488। गांधीधाम-9825662028 । वडोदरा-96248 65108। देहगाम-91 98249 52818

महाराष्ट्रः- विलेपार्ले-9167521008। मलाड़ ईस्ट-7700037496। नालासोपारा-7875262630।
पालघर-8554883095। पुणे-9922942184। नाशिक-8999961834। सेलु-9422216123। इचलकरंजी-7558460981।

उत्तरप्रदेशः-वृंदावन-मथुरा-9988090900। गोरखपुर-9336409588। सीतापुर-8795555501,9838491708,7007089248।
आगराः-9756190459 । वाराणसी-9598702973। बरेली-9634171403। चित्रकूट-6391701302। फैजाबाद-8006722974।

दिल्लीः- पीतमपुरा- 9873745454,8800953294। न्यू दिल्ली -9811117340। सुंदर नगर -9818044612।

मध्यप्रदेशः- मालवा-सालरिया-76656 90334 । इन्दोर-9826925958 । ग्वालियर-6378130837। मंदसौर-8827420333।

वेस्ट बंगालः-कोलकाता-8335082771,9830508363 वेस्ट दुर्गापुर-7908004377। सिलीगुड़ी-8597253275।

हरियाणाः-गुरुग्राम-9873243553,8800210272। रेवाड़ी-9728717373 । **पंजाबः**-अबोहर-9464911162।
मोहाली- 9888476785। **आंध्रप्रदेशः**- विशाखापट्नम-9440480037 । चिराला-8019998770।
आसामः- जोरहट 7002959522 । गुहाटी-7002267423 । **छत्तीसगढ़ः**-रायपुर-7000891685 । दुर्ग-9425510729 ।
कर्नाटकाः-बैंगलोर-8094565460,9886312521। **ओडिशाः**- भुवनेश्वर-7609823272,9090009203। पूरी-9437365977।
तमिलनाडुः-इरोड-9843035554 । **तेलंगानाः**-हैदराबाद- 88855 21008 ।

Head Office

Vedik Go Utpad Foundation

Shree Surbhi Shaktipeeth

Sabarmati Tat,Near, Bhat Toll,S.P Ring Road,
Gandhinagar, Gujarat- 382428
Contact & Whatsapp: +91 73000 44444

www.vedlakshana.com info@vedlakshana.com

Follow us on: Vedlakshana official

कुल पृष्ठ- 36
अप्रैल 2025

प्रकाशन तिथी : 01.04.2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष — रु 21000
2. आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी — रु 31000
3. आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी — रु 1,01,000
4. गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा — रु 2,51,000
5. जीवन के साथ भी-जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश — रु 2,51,000
6. गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि — रु 4,51,000
7. अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि — रु 5,00,000
8. बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि — रु 11,00,000
9. गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा-सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि — रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS

BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)

Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151